अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

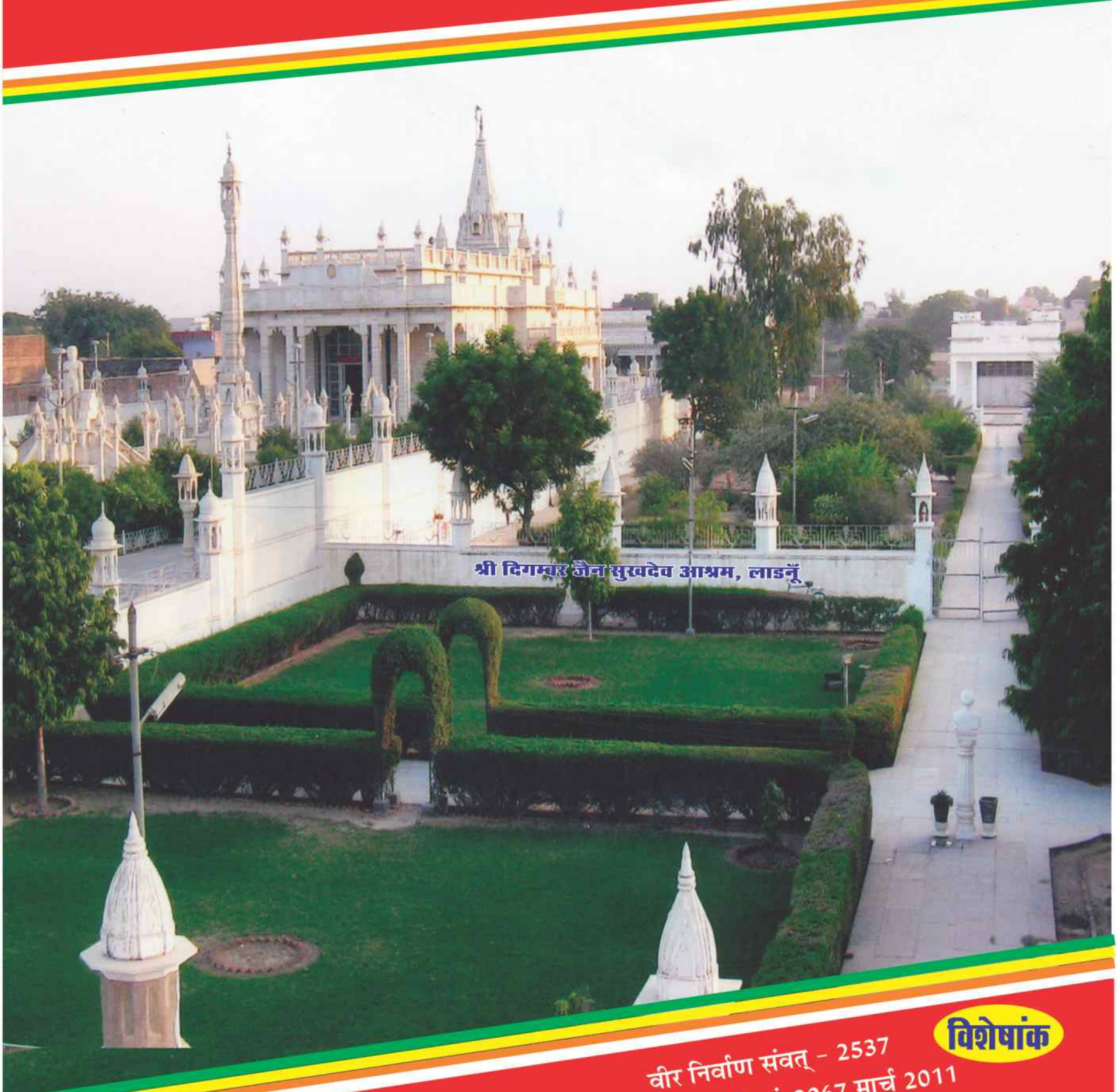

विशेषांक

वीर निर्वाण संवत् - 2537
पौष कृष्ण पक्ष वि.सं. 2067 मार्च 2011

वर्ष : पाँच अंक : पन्द्रह

मूल्य : 10/-

मूकमाटी

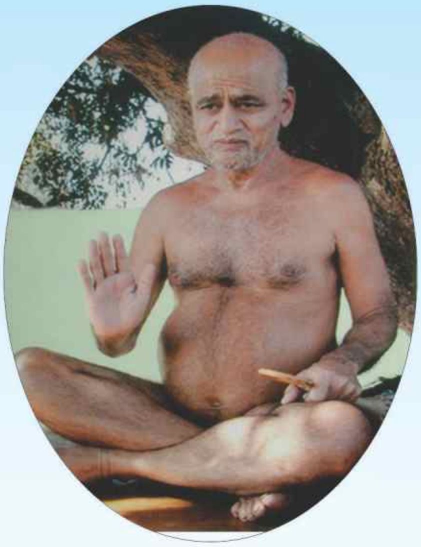

सीमातीत शून्य में
नीलिमा बिछाई,
और.... इधर.... नीचे
निरी नीरवता छाई,
निशा का अवसान हो रहा है
उषा की अब शान हो रही है
भानु की निद्रा टूट तो गई है
परन्तु अभी वह
लेटा है

माँ की मार्दव-गोद में,
मुख पर अंचल लेकर
करवटें ले रहा है।
प्राची के अधरों पर
मन्द मधुरिम मुस्कान है
सर पर पल्ला नहीं है और
सिंदुरी धूल उड़ती सी
रंगीन -राग की आभा
भाई है, भाई....!

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

3 अप्रैल	भ. अनंतनाथ एवं अरहनाथ मोक्ष कल्याणक	18 अप्रैल	षोडशकारण व्रत पूर्ण
8 अप्रैल	भ. अजितनाथ मोक्ष कल्याणक	2 मई	भ. नमिनाथ मोक्षकल्याणक
8 से 17 अप्रैल	दक्षलक्षण व्रत	4 मई	भ. कुन्थुनाथ जन्म/तप/मोक्षकल्याणक
9 अप्रैल	भ. संभवनाथ मोक्ष कल्याणक	6 मई	अक्षय तृतीया
14 अप्रैल	भ. सुमतिनाथ जन्म/ज्ञान/मोक्ष	9 मई	भ. अभिनंदननाथ गर्भ/मोक्षकल्याणक
16 अप्रैल	भ. महावीर जयंती जन्म कल्याणक,	31 मई	भ. शान्तिनाथ जन्म/तप/मोक्ष
	मुनि प्रमाण सागर,	5 जून	भ. धर्मनाथ मोक्ष कल्याणक
	मुनि आर्जवसागर आदि 8 मुनि दीक्षा	6 जून	श्रुतपंचमी
16 से 18 अप्रैल	रत्नत्रय व्रत	23 जून	भ. विमलनाथ मोक्ष कल्याणक

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन, पथरिया** दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी,
भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक

भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-पाँच
अंक-पन्द्रह

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक	पृष्ठ
1. विज्ञान, अध्यात्म का सत्संग करे ''सम्पादकीय'' — श्रीपाल जैन 'दिवा'	2
2. ध्यान का आधार द्रव्य मुनि आर्जवसागर	4
3. जैन गणितीय विज्ञान : नवीन शोध ग्रन्थ एवं प्रो. लक्ष्मीचंद्र जैन प्रो. आर.सी. गुप्ता	7
4. सम्यक ध्यान शतक मुनि आर्जवसागर	9
5. गणितसार संग्रह	10
6. आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव डॉ. अजित कुमार जैन	12
7. मन, प्रबन्ध और ध्यान डॉ. संजय जैन	14
8. कर्म का रहस्य डॉ. पी.सी. जैन	16
9. आचार्य पद दिया श्रीमती सुशीला पाटनी	18
10. क्रोध से बचने के अनेक उपाय डॉ. वीरसागर	19
11. विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका कु. आराधना जैन	21
12. स्वास्थ्यप्रद आहार : अहिंसक आहार डॉ. बी.एल. बजाज	23
13. जैन तीर्थंकर और उनके लांछन डॉ. श्रीमती अल्पना जैन मोदी	25
14. समाचार	27
15. प्रश्नोत्तरी	36

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

विज्ञान, अध्यात्म का सत्संग करे

-श्रीपाल जैन 'दिवा'

विश्व के प्राणी मात्र में जिजीविषा विद्यमान है। यह जिजीविषा वर्तमान में हिसंक-हथियारों एवं सर्वनाश करने वाले परमाणु अस्त्र-शस्त्रों के ढेर पर विवशता वश बैठी हुई है। संसार के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानव के लोभ-लालच, के दुश्चिन्तन ने, परस्पर शंका-भय ने, ईर्ष्यायुक्त प्रतिस्पर्धा ने, अंह के हिमालय खड़े कर दिये हैं। विकास व प्रगति के नाम पर प्रकृति का दोहन क्रूरता पूर्वक किया जा रहा है। प्रकृति के प्रतिकूल चलकर आधुनिक प्रगति के गीत गाये जा रहे हैं। प्रकृति की छेड़छाड़ करता मनुष्य निर्दयतापूर्वक अन्य जीवों की जान की परवाह किये बिना, मनमानी करने पर उतारू व उतावला-बावला हुआ जा रहा है। जिसके दुष्परिणाम स्वरूप भीषण भूकम्प, महासागरों में बाढ़ और सुनामी नाम वाली कुनामी सर्वनाशक समुद्री लहरें प्रलय के दृश्य उपस्थित कर रही हैं। ताजा उदाहरण जापान के भीषण तूफान सुनामी लहरों के कहर का है। सुनामी की चपेट में जापान के परमाणु ऊर्जा के कारखाने आये, विस्फोट हुए और रेडियोधर्मिता से परिवेश घातक हुआ। सर्वनाश हुआ, लाखों लोगों ने जान से हाथ धोये। जन-धन का सर्वनाश हुआ। विज्ञान विकास की राह में अध्यात्म का सत्संग जब-जब छोड़ता है तब-तब वह अंधा होकर सर्वनाश का निमित्त बनता ही है। अध्यात्म के बिना, अहिंसा के बिना, संयम के बिना विज्ञान दो कदम नहीं चल सकता। वह चलेगा तो प्राणी मात्र के सर्वनाश का कारण बनेगा। हिंसा का हाहाकार मचेगा। विज्ञान के पास अन्वेषक बुद्धि है पर प्रशस्त भाव नहीं। प्रशस्त भाव से ही धर्म की साधना होती है। धर्म आत्मानुशासन प्रदान करता है। मानवता के लिए यही आत्मानुशासन, संयम, तप, त्याग यथाजात दिगम्बर धर्म का प्रवर्तन वर्तमान तीर्थंकर चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने किया था। भूतकाल चौबीसी के अस्तित्व की मान्यता की छत्रछाया में भगवान आदिनाथ को दिगम्बरधर्म का प्रवर्तक कहना ही समीचीन है। केवल वर्तमान चौबीसी के कालखण्ड के परिपेक्ष्य में उन्हें दिगम्बर धर्म/जैनधर्म के संस्थापक के रूप में उल्लेखित किया जाता है।

आदिनाथ जी ने मानवजाति के लिये असि-मसि-कृषि विद्या वाणिज्य और शिल्प इन षट् विद्याओं की सीख देकर कृषि के माध्यम से अन्न दालान्नफल आदि की फसल पैदा करना संसार को सिखाया। जिसमें शाकाहार भी गर्भित है। पर्यावरण की सुरक्षा, जल, वायु की शुद्धता की सीख दी। आदिनाथ जी की परम्परा में 23 तीर्थंकरों ने भी संसार को अहिंसा की-सूक्ष्म अहिंसा की देशना दी। इनमें भी वर्तमान जैन शासन के शास्ता भगवान महावीर ने तो हिंसा के घोर कठिन समय में ''जिओ और जीने दो'' की देशना से हिंसा के हाहाकार को अहिंसा की देशना से दूर किया। जीवन जीने की कला सिखाई साथ ही मरने की कला सल्लेखना का प्रत्यायन किया।

वस्तुतः यदि विश्व में शांति स्थापित करना है तो संसार को सबको जीने देने का भाव धारण करना पड़ेगा। स्वयं जिओ पर दूसरों को भी जीने दो। हर्ष का विषय है कि विश्व के देशों की प्रमुख

संस्था 'संयुक्त राष्ट्र संघ' ने अहिंसा को मान्यता दी है। 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त को स्वीकार भी किया है। परन्तु इसके पालन के लिये देशों के अहं के हिमालय आड़े नहीं आना चाहिए नहीं तो परमाणु युद्धों से सर्वनाश होने में समय नहीं लगेगा। हमें प्रयास यह करना है कि महावीर जयंती विश्व के देश मनायें और महावीर की देशना को अंगीकार करें जिससे मानवता व जीव मात्र के प्राणों की रक्षा हो सके। पर्यावरण की सुरक्षा हो सके। सभी जीव सरलता से निर्विघ्न अपना जीवन जी सकें।

विज्ञान, आध्यात्म को साथ लेकर चले दोनों मिलकर विश्व के विकास की नई परिभाषा लिखें। यह समय की पुकार है समय की माँग है। इस माँग को पूरा करके ही हम विश्व में शान्ति स्थापित कर सकेंगे। महावीर के जिओ और जीने दो के संदेश में यही संदेश निहित है।

''सबके मंगल में निज मंगल
निज मंगल में सबका मंगल''

इस मंगल भावना के साथ विराम ।

आरती श्री आदिनाथ भगवान की

आरति प्रभु आदीश्वर जी की ।
बाहुबली भरतेश्वर हिय की ।।
असि-मसि-कृषि विद्या के दाता।
वाणिज शिल्प कला के ज्ञाता ।।
अंक विधा सुन्दरी सिखाई ।
ब्राह्मी लिपि ब्रह्मीजी सुता की ।।
श्रेयांस ने आदीश्वर मुनि को ।
पड़गाहा आहार विधी की ।।
जल-मल-नेत्र युद्ध भ्राता के ।
प्राण बचे लाखों योद्धा के ।।
जीते बाहुबली विरते की ।
हारे भरत ज्येष्ठ जीते की ।।

योगीराज जगद्गुरु भगवन ।
मौनी ध्यानी मान मुक्त मन ।।
तप के ताप घातिया भस्में ।
समवशरण सद्दर्शन उसमें ।।
धर्म दिगम्बर जगत प्रवर्तक ।
संयम कर्म मोक्ष शिल्पी की ।।
आदिम तीर्थंकर मोक्षी की ।
सहस्र वर्ष तप के साक्षी की ।।
शुक्ल ध्यान निज में प्रगटाया ।
कर्म नशे मोक्ष सुख पाया ।।
जन्म-जीत सुखकन्द सिद्ध की ।
तारक-पारक सुखद सिद्ध की ।।

- श्रीपाल जैन 'दिवा'

ध्यान का आधार द्रव्य

धर्मप्रेमी बन्धुओं, *-प्रवचन : मुनिश्री आर्जवसागर*

जीव द्रव्य जितना श्रेष्ठ होगा अर्थात् संज्ञी पञ्चेन्द्रिय, भव्य, जिनधर्म से और संयुक्त होगा या अणुव्रती, महाव्रती होगा या क्षपक श्रेणी वाला या केवलज्ञानी होगा उतना उत्कृष्ट जीव द्रव्य कहलायेगा और वह उतने ही श्रेष्ठ ध्यान को पायेगा। प्रशस्त ध्यान करने के लिए संज्ञी पञ्चेन्द्रिय भव्य जीवों के लिए जिनधर्म से संयुक्त जैनी और सम्यग्दृष्टि बनना अति आवश्यक है। अणुव्रती बनना अगर सबके वश की बात नहीं है तो सम्यग्दृष्टि बनने मात्र से धर्मध्यान शुरु हो जायेगा वर्ना धर्मध्यान भी नहीं होगा। सोलह प्रकार के ध्यानों में आर्त्त, रौद्र, धर्म, शुक्ल इन चार के चार-चार भेद हैं। ये आर्त्त, रौद्र ध्यान तो अनादिकाल से चल रहे हैं। लेकिन धर्म ध्यान पाने के लिए सम्यग्दृष्टि बनकर चतुर्थ गुणस्थान हुये बिना धर्मध्यान शुरु नहीं होता। इसलिए हमें सम्यग्दर्शन का प्रकरण सुनना बहुत जरूरी है। व्यवहारिक सम्यग्दृष्टि बनने के लिए अणुव्रत, महाव्रत नहीं लेना पड़ता है और न ही घर छोड़ना पड़ता है। मात्र जैनधर्म के नियम और एक वीतरागता पर अटूट श्रद्धा हो, इतना हो गया तो आप सम्यग्दृष्टि बन गये। वह सम्यग्दर्शन पच्चीस मल दोषों से रहित होना चाहिए। सम्यग्दर्शन जीवन का आधार है सद्‌गति पाने का उपाय है और वही मोक्ष रूपी महल की प्रथम सीढ़ी भी है। कहते हैं छहढाला में कि-

''मोक्ष महल की परथम सीढ़ी, या बिन ज्ञान चरित्रा।
सम्यक्ता न लहे सो दर्शन, धारों भव्य पवित्रा ।।''

सम्यग्दर्शन (मोक्ष महल की परथम सीढ़ी) मोक्ष रूपी महल की प्रथम सीढ़ी है (या बिन ज्ञान चरित्रा) इसके बिना ज्ञान और चारित्र (सम्यक्ता न लहे) सम्यक्ता को प्राप्त नहीं होते (सो दर्शन) वह सम्यग्दर्शन (धारो भव्य पवित्रा) हे भव्य जीवों! तुम धारण करो। इसके बिना तो द्वादशांग का ज्ञान भी मिथ्याज्ञान कहलाता है। जिसके बिना सभी व्रत, चारित्र भी मिथ्या चारित्र कहलाते हैं अतः उस सम्यग्दर्शन को तुम लोग धारण करो। जो ऐसे सम्यग्दर्शन रूपी रत्न पा लेते हैं उनके आठ दुर्गतियों पर ताला लग जाता है। आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्डक में कहते हैं कि-

''सम्यग्दर्शन शुद्धा नारकतिर्यंङ नपुंसकस्त्रीत्वानि ।
दुष्कुल विकृताल्पायुर्दरिद्रतां च व्रजन्ति नाप्य व्रतिका ।।35।।''

अणुव्रत नहीं लिये तो भी अगर सम्यग्दर्शन मात्र से जो शुद्ध हो गया और जिसने वीतराग को ही आलम्बन या आधार बना लिया अर्थात् अब मैं सच्चे देव, शास्त्र, गुरु, नवदेवता, चार शरण, पंच परमेष्ठी

के अलावा यह मस्तक कहीं पर भी नहीं झुकाऊँगा। इतनी अटूट श्रद्धा हो जाती कि मैं निर्दोष परमात्मा को ही नमन करूंगा वह राग, द्वेष, काम आदि विकारों से मुक्त होना चाहिए। चाहे वो कोई भी नाम वाला हो चाहे वो राम भी क्यों न हों। राम भी मोक्ष गये हैं। णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं में हम उन राम, हनुमान आदि सभी परमात्माओं को नमस्कार कर लेते हैं। इसलिए ध्यान रखना जो निर्दोष परमात्मा के चरणों में ही मस्तक झुकाता है वही है सम्यग्दृष्टि। जहाँ पर पंच पाप पल रहे हैं वहाँ पर सर नहीं झुकाता, अगर झुकेगा तो सम्यग्दर्शन नहीं आयेगा। इसी श्रद्धा के साथ जो सम्यग्दर्शन को धारण करते हैं वे लोग ऐसे समीचीन ध्यान को प्राप्त करते हैं। तो उस श्लोक में यह कह रहे हैं कि जो सम्यग्दर्शन से शुद्ध हो गया वह नरक, तिर्यञ्च, नपुंसक, स्त्री, दुष्कुल, विकलांग, अल्प आयु और दरिद्र इन आठ अवस्थाओं को प्राप्त नहीं होता इन पर ताला लग जायेगा समझो। अगर मरण करेगा और बद्धायुष्क नहीं है तो सीधे स्वर्ग ही जायेगा और वहाँ से सीधा समवशरण जायेगा साक्षात् भगवान का दर्शन करेगा। अगर ये फल तुम्हें पाना हो तो अपनी श्रद्धा को निर्मल बनाओ। सम्यग्दर्शन को अपने जीवन में लाओ। ऐसी आत्माओं को परमात्मा पद दूर नहीं है। यह संस्कार या धार्मिक अनुष्ठान परमात्मा बनाने के लिए बहुत ही श्रेष्ठ कार्य करता है। अभी तो केवल भगवान महावीर मोक्ष गये ढ़ाई हजार वर्ष हुये। 21,000 वर्ष का यह पञ्चम काल है। साढ़े अठारह हजार वर्ष अभी बाकी हैं। कहते हैं कि यह स्वप्न में देखा गया या एक महान आत्मा के स्वप्न में आया कि दो बछड़े एक रथ को खीच रहे हैं। इसका फल बतलाया गया कि पञ्चम काल में धर्म रूपी रथ को खीचने वाले जवान होंगे, कम उम्र वाले ही उस रथ को खीचेंगे वृद्धों से वह रथ नहीं खिचने वाला है। इसलिए अन्तस् कहता है कि ऐसे बाल पीढ़ी को और जवानों को धर्म की ओर आकृष्ट करें। उन्हें सिखायें धर्म के सूत्रों को, ध्यान को, आचरण को, जिसके माध्यम से उनकी एनर्जी-ऊर्जा अन्दर की ओर बहे। वह अन्दर में बहने वाली ऊर्जा बहुत पावरफुल (Powerful) होती है। वह परम्परा से हमारे धर्म को पूरे पञ्चम काल के अंत तक प्रवाहित करती रहे यह जीव द्रव्य की शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। ध्यान के प्रकरण में द्रव्य के बारे में वर्णन चल रहा है। द्रव्य कैसा होना चाहिए? तो जिसके माध्यम से ध्यान किया जायेगा यह शरीर व्यवस्थित हो उसके पहले जो इस शरीर में जीव द्रव्य है वह देखने में नहीं आता उसके आधार से ही ध्यान होता है। वह द्रव्य ही ध्यान का एक प्रमुख साधन है। जीव ही ध्यान करता है और श्रेष्ठ परमात्मा का अगर ध्यान करते हैं तो यह एक द्रव्य है यह एक आलम्बन स्वरूप है। उस ध्यान के लिए और भी बाहरी सहायक द्रव्य हैं जैसे कि शरीर, संहनन और शरीर के लिए आवश्यक सामग्रियाँ। सब है लेकिन उसके साथ सहयोगी हैं अपने संयम, शील और अपना शुद्ध खान, पान। ऐसा सधा हुआ जीवन साधक का नियम से साध्य सम बन जाता है। ऐसे ही हम

एक आदर्श जीवन के बारे में सुनने जा रहे हैं जिससे अपने लिए ज्ञात होगा कि ध्यान के योग्य द्रव्य कितना उत्कृष्ट होना चाहिए। एक बार की बात है कि एक समय एक नगर में निर्ग्रन्थ मुनि महाराज जी आये हुये थे। लोगों ने बड़ी भक्ति भाव से उनका सत्संग पाया। सभी उनकी परिचर्या में लीन हैं। प्रवचन भी चल रहे हैं। नियम, संयम की साधना भी चल रही है। कोई छोटे-कोई बड़े ऐसे नियम ले रहे हैं। उन्हीं श्रावकों में से एक युवक वह विचार करता है जो कि बालक से युवा की ओर जा रहा है; उसने विचार किया है कि हम जो गुरुदेव के चरणों में आकर इनके ज्ञान को सुनकर प्रभावित हुए हैं, इनके चरणों की शरण पाकर इन जैसे ज्ञानी बन जायें, ज्ञानी बनकर अच्छे ध्यानी बन जायें और इनके समान कभी बन सकें तो बन सकें लेकिन कम-से-कम सच्चे श्रावक तो बन जायें। इस ढंग से वह उनके चरणों में रहने के लिए अनुमति माँगता है तो गुरुदेव कहते हैं कि रह तो सकते हो लेकिन यहाँ तो वैराग्य की प्रमुखता है, राग-रंग से रहित गंभीरता के साथ रहकर के ज्ञान; अध्ययन करना होता है। ठीक है गुरुदेव स्वीकार है। इसके पहले जो तुम्हारे स्वामी हैं, रक्षक हैं, तुम्हारे लिए जिन्होंने जन्म दिया है उनकी अनुमति भी आवश्यक है। अगर वे अनुमति दे देते हैं तो बहुत अच्छा होगा, वैसे तो प्रत्येक आत्मा को धर्म पालन की स्वतंत्रता है फिर भी उनकी अनुमति बहुत श्रेष्ठ बात है। जाकर कहो माता-पिता से। तो कहा ठीक है गुरुदेव। जरूर मिलेगी मुझे आशा है और चला गया। जाकर माता-पिता को पूछ लिया और उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, कहा बेटा तुमने बहुत अच्छा विचार किया है; तुम जाओ जाकर गुरुओं की सेवा करो, सेवा कर ज्ञान पाओ, ज्ञान पाकर के पुनः घर पर आना, घर आकर के हम लोगों को भी ज्ञान देना। अनुमति मिल गयी चला गया। जंगल, उपवन, नगर पर विहार होता रहा। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग रूप शास्त्र का अध्ययन चलता रहा। जब श्रावक के योग्य शास्त्रों का अध्ययन पूर्ण हो चुका तब गुरुदेव ने कहा अब अध्ययन तो पूर्ण हुआ है अब आगे पढ़ना है तो मुनि बनकर के पढ़ना होता है। सिद्धान्त शास्त्रों का अध्ययन श्रावकों को नहीं करवाते इसलिए अब इसको जीवन में उतारो। संसार में ये परिग्रह आत्मा को सुख देने वाले नहीं हैं। अपने जीवन में इस स्वाध्याय का फल संयम और चारित्र है।

क्रमशः ....

भाव विज्ञान त्रैमासिक पत्रिका के सदस्य अवश्य बनिए ।

जैन गणितीय विज्ञान : नवीन शोध ग्रन्थ एवं प्रो. लक्ष्मीचंद्र जैन

- प्रो. आर.सी. गुप्ता

जैन सिद्धांत और जैन विषयक अध्ययन से नवीन रुचि भारत के बाहर भी लगातार बढ़ रही है जैसा कि लंदन विश्वविद्यालय के पूर्वदेशीय एवं अफ्रिकीय अध्ययन विद्यालयों में इन विषयों पर नियमित हो रही कार्यशालाओं से विदित होता है। हाल ही में फ्लोरिडा के अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय मियामी (संयुक्त राज्य अमेरिका) में भगवान महावीर प्राध्यापिकी की स्थापना जैन कला और विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन और शोध के लिए एक अन्य बड़ी प्रगति है।

कुछ समय पूर्व ही जैन विज्ञान पर सफलतापूर्वक पूर्ण किये गये अनेक स्नातकोत्तर एवं पांडित्य (शास्त्रज्ञ) अनुसंधान एवं तदर्थ निबन्ध शास्त्र, साथ ही बड़ी संख्या में प्रकाशित विस्तृत कार्य, भारत में जैन अध्ययन के क्षेत्र में बढ़ती हुई बौद्धिक गतिविधियों को दर्शाते हैं। जिनागम में करणानुयोग/गणितानुयोग का समावेश यह दर्शाता है कि गणित शास्त्र हमेशा से ही सम्पूर्ण रूप से जैनागम साहित्य का एक भाग रहा है। वास्तव में जैन विश्व विद्या, जैन दर्शन और कुछ अन्य विज्ञान सर्वथा गणितीय हैं। विशेषकर जैन गणितीय विज्ञान के क्षेत्र में प्राध्यापिकी स्थापित करने के अवसर ही नहीं अपितु स्पष्ट (प्रत्यक्ष) रूप से आवश्यकता है।

यद्यपि गणित शास्त्र में कुछ जैन उपलब्धियाँ एक शताब्दी से अधिक समय से ज्ञात हैं, किन्तु लोकोत्तर जैन गणित का अध्ययन अत्यंत सम्पूर्णता से करने और इस अध्ययन को अपूर्व ऊँचाईयों तक ले जाने का श्रेय प्रो. लक्ष्मीचंद्र जी जैन को जाता है जिनका लेखन और प्रकाशन बहुत ही विपुल और असाधारण (अति विशाल) है। उनकी नवीनतम शोधें प्राकृत और अन्य भारतीय भाषाओं के मूल ग्रन्थों (विशेषतः जो जैन कर्म सिद्धांत से सम्बन्धित हैं) के दीर्घ एवं गहरे अध्ययन का परिणाम है।

1926 में जन्म लेकर उन्होंने महाविद्यालयीन शिक्षा के दिनों से ही जैन अध्ययन को गंभीरता से लिया। अब तो जैन गणितीय विज्ञान के क्षेत्र में (विशेषतः लोकोत्तर भाग में) वह निश्चय ही भीष्म पितामह हैं। वे गणित (प्राचीन एवं नवीन) गणितीय दर्शन और मानव ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में पारंगत हैं। प्रोफेसर जैन ने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के अंतर्गत जैन गणित से सम्बन्धित अनेक विशाल अनुसंधान पूर्ण किये। अनेक शोध पत्रों और लेखों के साथ-साथ उनके द्वारा उत्पादित प्रकाशनों में शामिल हैं :

1. ''एक्जेक्ट साइन्सेस इन कर्मा एन्टीक्विटी'', (चार भाग, जबलपुर, 2003-2006)
2. ''मैथमैटिकल साइन्सेस इन कर्मा एन्टीक्विटी'', (दो भाग, जबलपुर 2008-2009)
3. ''दी ताओ ऑफ जैना साईन्सेज़'', (द्वितीय प्रकाशन, जबलपुर 2009)
4. हाल ही में प्रकाशित हो रही.... ,''सिस्टेमिक साइन्सेस इन कर्मा एन्टीक्विटी'' (3 भाग) जिसका पहला भाग ''लब्धिसार'', प्रकाशित हो चुका है (जबलपुर 2010)

में अनेक ग्रन्थ जैन गणित विद्यालय की उच्चतम उपलब्धियों को प्रकाशित करते हैं। इन उपलब्धियों का आधुनिक गणित से परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना, प्रो.जैन के प्रयत्नों का विशेष रूप प्रस्तुतीकरण है। निस्सन्देह उनका अंशदान बहुत प्रतिष्ठित (गौरवपूर्ण) है और निकट भविष्य में अद्वितीय रहेगा।

भारतीय सैद्धान्तिक विज्ञान (साधारण रूप से) और जैन सैद्धान्तिक विज्ञान (विशेष रूप से)के इतिहास और दर्शन के विद्वानों के एक विस्तीर्ण समुदाय के आगामी अध्ययन और शोध के लिये उनके (प्रो. जैन) द्वारा प्रस्तुत कार्यों ने निश्चय ही एक विशाल क्षेत्र प्रकट किया है। उनके द्वारा की गई शोधों आदि के प्रति ध्यान दिये बिना भारत में गणितीय विज्ञान के इतिहास का पूर्णरूपेण समझा या लिखा नहीं जा सकता।

जैन गणितीय दर्शन का क्रमिक विकास उनके पूर्ववर्ती नैयायिकों (तार्किकों) के कारण हुआ। 'लब्धिसार' (प्राप्य का निष्कर्ष) कर्म सिद्धान्त से सम्बन्धित गणितीय दर्शन विषय का एक विचारणीय मूल जैन ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ और उसका सहचर ग्रन्थ 'क्षपणासार' प्रसिद्ध नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती (ईसा पूर्व 1000 वर्ष) के द्वारा लिये गये हैं जिनके 'त्रिलोकसार' (करणानुयोग समूह) और 'गोम्मटसार' (द्रव्यानुयोग समूह) सर्वविदित हैं।

कर्म सिद्धांत जीव की बन्ध से उच्चतम रूप (मोक्ष) तक की यात्रा और उसके परिवर्तन (रूपान्तर) से सम्बन्ध रखता है। 'लब्धिसार' के अनुसार स्वयं प्राप्त उपलब्धियाँ (लब्धि), जीवधारियों द्वारा गतियों में उनके कर्म सहित प्रयत्नों से आती है। कर्म की गति का सिद्धांत गणितीय संरचना में संख्यासूचक (अंक), बीजगणितीय (अर्थ) एवं रेखागणितीय (आकार) लाक्षणिक अर्थ (संदृष्टि) से प्रयोग में लाया जाता है। इससे संबंधित विषय (मार्ग) में लघुगणितीय विचार, सामान्य परिमाण और बहुत विस्तृत अंक विद्या के साथ-साथ अकृत्रिम गणित समूह सिद्धांत, काल्पनिक (प्रबंध या प्रयोग) सिद्धांत एवं मस्तिष्क में सूचनाओं के प्रसार का वैज्ञानिक अध्ययन सम्मिलित है।

कार्यशील परिभाषाओं और लाक्षणिक अर्थों को समझाने में प्रो. जैन की व्याख्या बहुत विस्तृत और गणितीय है। प्राचीन विज्ञान के इतिहास और दर्शन के सभी गम्भीर विद्वज्जनों को प्रो. जैन के उपर्लिखित कार्यों (ग्रन्थों) की समीक्षा करनी चाहिये। इन ग्रन्थों को सभी अच्छे पुस्तकालयों में स्थान मिलना चाहिये एवं इनका विस्तृत प्रचार होना चाहिये।

ये प्रो. जैन की गहरी एवं धर्मनिष्ठ विद्वता को प्रमाणित करते हैं। वे उन सभी परितोषिकों के पूर्ण योग्य हैं जो उन्हें मिले हैं एवं वे और सम्मानों के लिये भी पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

आलेख : प्रो. आर.सी. गुप्ता, गणित भारतीय अकादमी, झाँसी (उ.प्र.) ।

अंग्रेजी से अनुदित : इंजीनियर कोमल जैन BE (Hons. Civil, FIE, CE, MBIE), 4, Utsav Vihar, 242, Napier Town, Jabalpur (M.P.)

सम्यक् ध्यान शतक

– *मुनि आर्जवसागर*

गतांक से आगे ....

सम्दर्शन वा ज्ञान, व्रत, रत्नत्रय हैं जान।
संवेगरु वैराग्य भी, शुभ भावन पहिचान।।

❖

आत्म तत्त्व की भावना, एक भावना नेक।
शिवसुख की ये भावना, करे आत्म अभिषेक।।

आर्त्तध्यान

अर्त्तिभाव ही आर्त्त है, जिसका दुःख है नाम।
अशुभ बंध, होय दुर्गति, बिगड़ें धर्म सु–काम।।

इष्टवियोग

जहाँ नष्ट हों इष्ट वे, पदार्थ या हों दूर।
कहाँ मिलेंगे, खेद यह, इष्ट वियोगी पूर।।

अनिष्ट संयोग

जहाँ अनिष्ट पदार्थ के, हट जाने का भाव।
अनिष्ट संयोगी बने, मिलता नहीं स्वभाव।।

पीड़ा चिन्तवन

तन की पीड़ा होय जब, रोगादिक हों मान।
रोग–भूख आदिक मिटें, पीड़ा चिन्तन ध्यान।।

निदान

इन्द्रादिक की सम्पदा, इन्द्रिय के वे भोग।
आगे हमको प्राप्त हों, यही निदान प्रयोग।।

आर्त्तध्यान के गुणस्थान

प्रथम पाँच गुणथान तक, सभी आर्त्त हों ध्यान।
छठवे उस गुणथान में, बिन निदान त्रय मान।।

क्रमशः ....

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

२. परिकर्मव्यवहारः

इतः परं परिकर्माभिधानं प्रथमव्यवहारमुदाहरिष्यामः ।

प्रत्युत्पन्नः

तत्र प्रथमे प्रत्युत्पन्नपरिकर्मणि करणसूत्रं यथा—

गुणयेद्गुणेन गुण्यं कवाटसंधिक्रमेण संस्थाप्य । राश्यर्धखण्डतत्स्थैरनुलोमविलोममार्गाभ्याम् ॥१॥

१ K तत्र च । २ K और B विन्यस्योभौ राशी । ३ K और B सङ्गुणयेत् ।

---

२. परिकर्म व्यवहार [अङ्कगणित सम्बन्धी क्रियाएँ]

इसके पश्चात्, हम परिकर्म नामक प्रथम व्यवहार प्रकट करते हैं ।

प्रत्युत्पन्न (गुणन)

परिकर्म क्रियाओं में प्रथम गुणन के क्रिया-सम्बन्धी नियम निम्नलिखित हैं—

जिस तरह दरवाजे की कोरें रहती हैं, उसी प्रकार गुण्य और गुणक को एक-दूसरे के नीचे रखकर, गुण्य को गुणक से दो रीतियों (अनुलोम अथवा विलोम क्रम से हल करने की विधियों) में से किसी एक द्वारा गुणित करना चाहिये । प्रथम विधि में गुण्य के खंड द्वारा गुण्य को विभाजित और गुणक को गुणित करते हैं । द्वितीय विधि में, गुणक के खंड द्वारा गुणक को विभाजित तथा गुण्य को गुणित करते हैं । तृतीय विधि में उन्हें उसी रूप में लेकर गुणन करते हैं ॥ १ ॥

---

(१) प्रतीक रूप से यह नियम इस प्रकार है—

'अब' को 'सद' से गुणा करने पर गुणनफल (i) $\frac{\text{अब}}{\text{अ}} \times (\text{अ} \times \text{सद})$; या (ii) $(\text{अब} \times \text{स}) \times \frac{\text{सद}}{\text{स}}$ या (iii) अब × सद होता है । यह स्पष्ट है कि प्रथम दो विधियों को उपर्युक्त गुणनखण्डों के चुनाव द्वारा क्रिया को सरल करने के उपयोग में लाते हैं ।

अनुलोम, अथवा हल करने की सामान्य विधि वह है जो व्यापक रूपसे उपयोग में लाई जाती है । विलोम विधि निम्नलिखित है—

१९९८ में २७ का गुणा करने के लिये—

१९९८
२७

२ × १	२				
२ × ९	१	८			
२ × ९		१	८		
२ × ८			१	६	
७ × १		७			
७ × ९		६	३		
७ × ९			६	३	
७ × ८				५	६
	५	३	९	४	६

प्रत्येक स्तंभ का योग करने पर उत्तर ५३९४६ प्राप्त होता है

अत्रोद्देशकः

दत्तान्येकैकस्मै[1] जिनभवनाया[2]म्बुजानि तान्यष्टौ। वसतीनां चतुरुत्तरचत्वारिंशच्छताय[3] कति ॥२॥
नव पद्मरागमणयः समर्चिता एकजिनगृहे दृष्टाः। साष्टाशीतिद्विशतीमितवसतिषु ते कियन्तः स्युः ॥३॥
[4]चत्वारिंशच्चैकोनशताधिकपुष्यरागमणयोऽ[5]र्च्याः।
एकस्मिन् जिनभवने सनवशते ब्रूहि क[6]ति मणयः ॥ ४ ॥
पद्मानि सप्तविंशतिरेकस्मिन्[7] जिनगृहे प्रदत्तानि।
साष्टानवतिसहस्रे[8] सनवशते तानि कति कथय ॥ ५ ॥
[9]एकैकस्यां वसतावष्टोत्तरशतसुवर्णपद्मानि। एकाष्टचतुः सप्तकनवषट्पञ्चाष्टकानां किम् ॥ ६ ॥
शशिवसुखरजलनिधिनवपदार्थभयनयसमूहमास्थाप्य।
हिमकरविषनिधिगतिभिर्गुणिते किं [10]राशिपरिमाणम् ॥ ७ ॥
हिमगुपयोनिधिगतिशशिवह्नित्रतनिचयमत्र संस्थाप्य[11]।
सैकाशीत्या त्वं[12] मे गुणयित्वाचक्ष्व[13] तत्संख्याम् ॥ ८ ॥
अग्निवसुखरभयेन्द्रियशशलाञ्छनराशिमत्र संस्थाप्य[14]।
रन्ध्रैर्गुणयित्वा मे कथय सखे राशिपरिमाणम् ॥ ९ ॥

---

१ B स्य हि। २ B नस्या। ३ B शतस्य कति भवनानाम्। ४ M B चत्वारिंशद्द्वयका शताधिका। ५ M ऽच्छाः। ६ M ते कियन्तस्स्युः। ७ M एकैकजिनालयाय दत्तानि। ८ M प्रयुक्त-नवशतगृहाणां किम्। ९ (यह श्लोक केवल M और B में प्राप्य है)। १० M और B किन्तस्य। ११ M प्यम्। १२ M अहो। १३ M मे शीघ्रम्। १४ B विन्यस्य।

उदाहरणार्थ प्रश्न

प्रत्येक जिनमन्दिर में आठ-आठ कमल पुष्प चढ़ाये गये। बतलाओ कि १४४ मंदिरों को कितने दिये गये? ॥ २ ॥ नौ पद्मराग मणि केवल एक जिनमन्दिर में पूजन में अर्पित किये हुए देखे जाते हैं। २८८ मंदिरों में (उसी दर से) कितने अर्पित किये गये? ॥ ३ ॥ एक जिनमंदिर में १३९ पुष्यरागमणि पूजन में भेंट किये जाते हैं। बतलाओ, १०९ मंदिरों में कितने मणि भेंट किये गये? [मूल गाथा में १३९ को १००+४०−१ रूप में लिखा हुआ है] ॥ ४ ॥ २७ कमल के फूल एक जिनमंदिर में भेंट किये गये। बतलाओ कि इस दर से १९९८ मंदिरों में कितने कमल भेंट किये गये? [मूल गाथा में १९९८ को १०९८+९०० लिखा है] ॥ ५ ॥ प्रत्येक मंदिर को १०८ स्वर्ण कमल भेंट की दर से, ८५६९७४८१ मंदिरों में कितने दिये जायेंगे? ॥ ६ ॥ १, ८, ६, ४, ९, ९, ७ और २ अंकों को इकाई के स्थान से लेकर ऊपर के स्थानों तक रखने से बनाई गई संख्या को ४४१ से गुणित करने पर क्या फल प्राप्त होगा? ॥ ७ ॥ इस प्रश्न में, १, ४, ४, १, ३ और ५ अंकों को इकाई के स्थान से लेकर ऊपर के स्थानों तक रखकर, प्राप्त की हुई संख्या को ८१ से गुणित करो और बतलाओ कि कौन सी संख्या प्राप्त होगी? ॥ ८ ॥ इस प्रश्न में १५७६८३ संख्या लिखकर उसे ९ से गुणित करो और तब, हे मित्र! मुझे बतलाओ कि गुणनफल राशि क्या होगी? ॥ ९ ॥ इस प्रश्न में १२३४५६७९ संख्या को ९ से गुणित करते हैं। यह गुणनफल राशि आचार्य महावीर के कथनानुसार, नरपाल के कण्ठ आभरण

क्रमशः ....

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

मनुष्य एक विवेक शील प्राणी है। अतः वह जो कुछ भी करता है सोच-विचार कर करता है। यदि उसकी सोच सुलझी तथा साफ सुथरी रहती है तो वह जो भी कुछ करता है उससे उसके जीवन के विकास का साधन बनता है क्योंकि विकृत सोच पूरे जीवन को विकृत बना देती है। अतः आहार-विहार और विचार में संतुलन रखना अत्यंत आवश्यक है।

जैसा आचार-वैसा विचार जैसी क्रिया-वैसा व्यवहार। व्यसनों में डूबा हुआ व्यक्ति धन पाने के लिए परिश्रम मजदूरी नहीं करना चाहता। वह धन कमाने की कोशिश नहीं करता। वह तो बिना प्रयास, अनायास ही धन पाना चाहता है। इसलिए व्यसनों में रत व्यक्ति चोरी-डाका, धोखा-फरेब आदि कुटेवों में ही उलझता-फंसता जाता है। व्यसनों की आग समय की हवा से बढ़ती जाती है। यह आग धन-सम्पत्ति, मान-मर्यादा, ज्ञान-ध्यान, सन्तोष, प्रेम-विश्वास सब कुछ लील जाती है एवं बचता है केवल दुःख, अपमान, क्लेश, पीड़ा-पश्चात्ताप-ग्लानि रूपी राख। व्यसनों से प्रारम्भ में क्षणिक भौतिक सुख तो मिलता है किन्तु उनका अन्त कितना भयावह और दुःखद होता है?

न्यायपूर्वक सम्पत्ति एवं आजीविका का उपार्जन, धन का अर्जन इसलिए आवश्यक है ताकि सुख और समृद्धि मिल सके और अन्याय, अनीति पूर्वक अर्जित किए धन के दुष्प्रभाव जैसे बीमारियों, अचानक आए संकट, आदि का निवारण हो सके। जीवन शैली को व्यवस्थित बनाया जा सके। नैतिक मूल्यों के द्वारा नैतिकता को जीवन का आधार बनाया जा सके तथा नैतिक मूल्यों के प्रति सभी के मन में प्रतिबद्धता जागृत की जा सके। जीवन-यापन करने हेतु प्रत्येक व्यक्ति को न्यायपूर्वक एवं नीतिपूर्वक धनोपार्जन करना आवश्यक है। किसी भी व्यवसाय को करने से पूर्व यह ध्यान रखना आवश्यक है कि व्यावसायिक गतिविधियों में हिंसा अनीति एवं अन्याय नहीं हो। वर्तमान परिवेश में निम्न व्यवसाय, उद्योग एवं निर्यात में शेयर आदि के रूप में निवेश करना अधर्म, अन्याय एवं अनीति पूर्वक धनोपार्जन होगा-

1. कीटाणुनाशक, इन्सेक्टीसाईड, पेस्टीसाइड, ब्लीचिंग पावडर एवं जिलेटिन आदि।
2. चमड़े की सामग्री-बेल्ट, पर्स जैकेट, सूटकेस, खेल-खिलौने, जूते, चप्पल, सेंडिल, कपड़े और दस्ताने आदि।
3. बेकरी - बिस्किट, ब्रेड, पेस्ट्री, क्रीमरोल, पाव, टोस्ट, नान, केक (अण्डे से बना), मैकडोनाल्ड, पिज्जा आदि फूडचेन और प्रोसेस्ड तथा प्रिजवर्ड फूड आदि।

4. कोल्डड्रिंक्स एवं साफ्ट ड्रिंक्स, कैम्पा कोला, पेप्सी, कोकाकोला, थम्सअप, मिरन्डा और लहर आदि ।
5. रेशम, कोसा एवं सिल्क के कपड़े और फर ऊन आदि।
6. हिंसक विस्फोटक हथियार, औजार–तलवार, छुरा और भाला आदि।
7. शराब, बियर, भाँग, चरस, गाँजा, अफीम एवं कोकीन आदि नशीले पदार्थ।
8. सिगरेट, बीड़ी, गुटखा एवं तम्बाकू आदि।
9. मृत या जीवित जीवों के अँग (किडनी, फेफड़ा, आँख आदि) हड्डी एवं रक्त व रक्त के अवयवों की औषधियां जैसे इन्सुलिन, ऊस्टर शैल की कैल्शियम टेबलेट और जिलेटिन कैप्सूल (हार्ड एवं साफ्ट), हीमोग्लोबिन आदि। क्योंकि रक्त और माँस में अनन्त त्रस और निगोदिया जीवों का वास होता है और इनके प्रयोग से भारी हिंसा होती है।
10. सीफूड, (समुद्री जीव, कीड़े–मकोड़े), मीट तथा लेदर आदि का व्यापार/ निर्यात/एक्सपोर्ट।
11. आईस्क्रीम, सॉस–जेम, टूथपेस्ट और शहद आदि।
12. जानवर की चर्बी से बने साबुन, सौंदर्य प्रसाधन और शैम्पू आदि।
13. ब्यूटी पार्लर और बालों के ब्रश आदि।
14. बोन चाइना के बर्तन आदि।
15. पशु अंगों (पशु दांत, जानवरों [केवल गाय, भैंस एवं बकरी का दूध छोड़कर]के दूध, अण्डे, हिरण की कस्तूरी) से निर्मित आयुर्वेदिक, एलोपैथिक और होम्यापैथिक औषधियाँ आदि।
16. होटल उद्योग/फैशन शो / हिंसा बहुल उद्योग आदि।

धर्म नियंत्रित अर्थ और काम के प्रबंधन द्वारा मानव अपने जीवन के चार आधार भूत तत्त्वों में अर्थ से शरीर को कृतार्थ, काम से मन को सन्तुष्ट, और धर्म से बुद्धि को तृप्त कर सकता है। साथ ही प्रबंधित दिनचर्या से व्यवस्थित आचरण, सदाचरण एवं सदगुणों की प्राप्ति कर सकता है। अहिंसात्मक आहार–विहार बड़ा व्यापक शब्द है, इसका तात्पर्य है अपनी सारी प्रवृत्ति में संयम लाना है। सिर्फ खान–पान में ही नहीं अपितु खाना–पीना, रहन–सहन, आचार–विचार सब में संयम लाना है। इसका अर्थ विवेक पूर्ण जीवन शैली को अपनाया जाना है। सात्विक रहन–सहन से जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। सदाचरण अपनाकर सद्गुणों की प्राप्ति होती है। तीव्र क्रोध, मान, माया, लोभ और भय में कमी की सम्भावना हो जाती है। हित, मित और प्रिय सम्भाषण की प्राप्ति होती है। आदर्श घर हेतु धर्म, अर्थ और काम तीनों पुरुषार्थ को प्रबंधित करने से बन्धु–बान्धवों में प्रेम, अतिथि का सत्कार, कुलाचार का पालन तथा परिजनों की सेवा की जा सकती है। पाँच गुणों, पति परायणता, धर्म–शीलता, कार्यकुशलता, मितव्ययता और कुलीनता के द्वारा गृहणी, सामान्य गृहणी से आदर्श गृहणी बन सकती है।

क्रमशः ....

मन, प्रबन्ध और ध्यान

विभिन्न दर्शनों व विज्ञान के आलोक में एक समीक्षात्मक अध्ययन

गतांक से आगे ....

डॉ. संजय जैन, पथरिया

कोई भी कार्य करने से पहले हम अपने मन में जैसी उस कार्य को करने की रूपरेखा या मानसिकता बनायेंगे वैसा ही वह कार्य सम्पन्न होगा। किसी भी कार्य की सफलता व असफलता हमारे मन, प्रबन्ध और ध्यान पर ही सर्वथा निर्भर करती है। व्यवहारिक जीवन में एक सफल विद्यार्थी, एक सफल व्यवसायी, एक सफल वैज्ञानिक, एक सफल इंजीनियर, एक सफल डॉक्टर एवं सफल मोक्षमार्गी अपने मन, प्रबन्ध और ध्यान के माध्यम से ही अपनी मंजिल तक पहुँचे हैं। इनकी सफलता का राज यही मन प्रबन्ध और ध्यान है।

यदि हमें अपनी मंजिल में सफलता प्राप्त करना है तो हमें उसकी पूर्व कार्य योजना बनानी पड़ेगी। यही कार्य योजना बनाना ही तो मन प्रबन्ध है।

मानव जीवन हमारे लिए सबसे बड़ी सौगात है। मनुष्य का जन्म ध्यान तप साधना करके भगवान सम बनने के लिए हुआ है। यह जीवन ज्योतिर्मय बेहद कीमती है। जीवन को छोटे उद्देश्यों के लिए जीना जीवन का अपमान है। अपनी मन ध्यान की समस्त शक्तियों को तुच्छ कामों में व्यर्थ करना व्यसनों एवं वासनाओं में जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद करना जीवन का तिरस्कार है। जीवन अनंत है हमारी शक्तियाँ भी अनंत हैं, हमारी प्रतिभाएं भी विराट हैं। हम अपनी शारीरिक मानसिक सामाजिक व आध्यात्मिक शक्तियों का लगभग 5 प्रतिशत ही उपयोग कर पाते हैं हमारी अधिकांश शक्तियाँ सुप्त ही रह जाती हैं। यदि हम अपनी आंतरिक क्षमताओं से मन, ध्यान, साधना, योग और तप का पूरा उपयोग करें तो हम पुरुष से महापुरुष, युगपुरुष मानव से महामानव बन जाते हैं, हमारी मानवीय चेतना से वैश्विक चेतना अवतरित होने लगती है। भगवान सम आलौकिक शक्तियाँ, सिद्धियाँ हमारी आत्मा के भीतर सन्निहित हैं। इन पृथ्वी पर मेरा जन्म आत्म कल्याण कर भगवान सम बनने के लिए हुआ है।

Meditation - To the First ! and for a student

The ultimate challange is to make your mind calm. and the ultimate solution is meditation. In Today's age, every second person recommends meditation - To the First! and for a student, there, cant's be a more powerful technique to improve long term performance in studies. Calm mind better retention, better health, focus and concentration are the abvious benefits. You will realise the benefits, as you practice. It includes a general sense of well being and happiness and spiritual growth. The' "MOOD" Problem can be taken care of by this way of meditation.

There are many types of me-focussing on breathing. Since your breath is always with you. It can be done anytime, any place, but the best is to settle down in a cool place that has dim light and is relatively quiet. You must focus all your attention on your Breathing observe your breath as it comes in and goes out you will see that your mind will tend to wonder a lot. But soon you will be able to bring it back on breathing; don't obstruct thoughts, let them go off. All you need to do is to keep your focus on breathing.

जैन दर्शन के अनुसार मन, प्रबन्ध और ध्यान के माध्यम से हमारे चंचल मन को लौकिक साधनों से दूर करना है, क्योंकि इनसे मन अपवित्र व चंचल होता है, जबकि धार्मिक साधन, प्रतिमा, शास्त्र इत्यादि में लगाने से एकाग्र व पवित्र होता है। ध्यान से ऊर्जा और मन प्रतिबन्ध एवं मोक्ष-सुख की सिद्धि तथा आनन्द की उपलब्धि होती है।

उद्देश्य : यदि व्यावहारिक जीवन में हम देखें तो हमारा समस्त जीवन विकास, भौतिकतावाद, आधुनिकतावाद की अंधी नकल में दौड़ रहा है, हमारा खान-पान रहन-सहन सब कुछ रोबोट जैसा हो गया है, क्योंकि हम अपने अनुसार नहीं जी रहे हैं, दूसरों के इशारों पर जी रहे हैं, ऐसा जीवन जीना हमारी मजबूरी बन गया है, जिससे हमें घुटन पैदा हो रही है, हम इस अमूल्य मानव जीवन से ऊब गये है, इससे हमारे जीवन में अनेक मनोविकार पैदा हो गये हैं, जिसके दुष्परिणाम बड़े ही भयानक हमारे सामने आ रहे हैं, जैसे कि मानसिक बीमारियां, अवसाद, आत्महत्या, तनावग्रसिता, ब्रेनट्यूमर, कैंसर, नशा और हिंसा आदि जटिल रोग व समस्यायें हमारे सामने आ रही है।

आज के इस भौतिकतावाद आधुनिकतावाद में हमनें समस्त भौतिक विलासता की वस्तुएँ तो प्राप्त कर ली है, जिससे हमें शारीरिक सुख तो प्राप्त हुआ है, लेकिन उनसे हमारी मानसिक शांति हमसे दूर चली गयी है, हमारे जीवन में मानसिक अस्थिरता पैदा हो गयी है।

पश्चिम का अंधानुकरण करते हुए हमारे रहन-सहन व खान-पान में भारी तब्दीली आ गई है। जबकि योग व ध्यान पश्चिम के बहुत से देशों में लोकप्रिय होते जा रहे हैं। वे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भारतीय योग ध्यान प्राकृतिक चिकित्सा तथा जड़ी बूटियों से बनी आयुर्वेदिक दवाईयों का उपयोग करने लगे हैं।

हमारा उद्देश्य, इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह है कि हमने जितनी उन्नति भौतिक रूप से की है उतनी ही उन्नति हम मानसिक रूप से करें। हमारी मानसिक शांति हमारे पास बनी रहे, इसके लिए हमें अपने आप को मानसिक रूप से तैयार करना पड़ेगा हमें अपने मन को स्थिर करना पड़ेगा मन का प्रबन्ध करना पड़ेगा। इसके लिए हमें अपने ध्यान, आसन, प्राणायाम, मन की एकाग्रता, आहार शुद्धि व अहिंसकाहार पर गौर करना पड़ेगा।

क्रमशः...........

कर्म का रहस्य

डॉ. पी.सी. जैन

कर्म का रहस्य जानना एक महत्वपूर्ण कार्य है क्योंकि इस रहस्य को जानने से ही आत्मा के स्वरूप का भान होता है। इस रहस्य को जानने से ही षट् द्रव्यमय जगत और उसके स्वरूप के परिणमन का ज्ञान होता है। इस रहस्य के ज्ञान के अभाव में कोई भी सम्यग्दृष्टि नहीं बन सकता। अतः कर्म के रहस्य को जानना आवश्यक है।

सामान्य व्यक्ति यह समझता है कि प्रतिक्षण जो प्रत्येक द्रव्य का परिणमन हो रहा है उसमें उसका कर्तव्य है, जगत के कार्य उसके द्वारा सम्पन्न होते हैं। लेकिन यह मानना मिथ्यात्व है। सूर्य, चन्द्र और तारे क्या मनुष्य द्वारा गति प्राप्त करते हैं। हवा और प्रकाश की गति क्या मनुष्य कृत है? शरीर के त्याग करने के बाद जीव को गति कौन प्रदान करता है? मनुष्य के शरीर के अन्दर रक्त संचालन और श्वास, हृदयकम्प आदि क्रियायें क्या मनुष्य की इच्छा से होती हैं? इन सबका उत्तर यह है कि इनकी गतियाँ मनुष्य द्वारा सम्पादित नहीं होती हैं। गति में तो धर्म द्रव्य ही निमित्त है। इसके अलावा सभी द्रव्य स्वगुण और स्वभाव के अनुसार देश, काल और भाव के अनुसार स्वतः परिणमन करते हैं और इसी प्रकार संसार के कार्यों का सम्पादन हो रहा है।

मनुष्य के जो क्रोधादि भाव उत्पन्न होते हैं, उनका कर्त्ता भी स्वयं शुद्ध आत्मा को मानना मिथ्या है।

आत्मा स्व-स्वभाव व गुणानुरूप परिणमन करती है :

आत्मा के गुण ज्ञान और दर्शन हैं अर्थात् जानना और देखना। यह आत्मा की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और इसी कारण आत्मा ज्ञाता-दृष्टा कहलाती है। आत्मा अपने स्वभाव के अनुसार ही कार्य कर सकती है। अपने ज्ञान, दर्शन गुण और ज्ञाता दृष्टा स्वभाव के अनुसार जानना और देखना ही आत्मा का धर्म है। अपने स्वभाव के विपरीत कार्य करने की आत्मा की शक्ति नहीं है।

आत्मा जिन अन्य पदार्थों को जानती और देखती है उनकी वह कर्त्ता नहीं हो सकती है। क्योंकि जो जानती है वह करती नहीं है और जो करती है वह जानती नहीं है। जैसे आँखें जिन पदार्थ को देखती हैं, उसको करती नहीं है, उसी प्रकार आत्मा केवल ज्ञाता द्रष्टा है, कर्त्ता नहीं है।

आत्मा अरूपी है, अतः वह किसी रूपी पदार्थ का अर्थात् पौद्गलिक पदार्थ का कर्त्ता बने, यह सम्भव नहीं। क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, मोह ये सभी पौद्गलिक हैं। यही कारण है कि जब ये भाव आते हैं तो मुख का रंग क्रोध में लाल, माया में काला तथा अन्य भावों में भी अन्य तरह का हो जाता है।

शंका : कुन्दकुन्दाचार्यकृत समयसारकी गाथा 125 में क्रोध में उपर्युक्त आत्मा को क्रोधी और

मान में उपर्युक्त आत्मा को मानी कहा गया है, अतः आत्मा क्रोधादि भावों की कर्त्ता है।

समाधान : यह ठीक है परन्तु आत्मा के क्रोधादिक भाव अज्ञान अवस्था के भाव हैं। जिस प्रकार आदमी पागल होकर जो चेष्टायें करता है वह उस मनुष्य की ही चेष्टायें हैं और किसी की नहीं हैं उसी प्रकार अज्ञान अवस्था में क्रोधादिक का कर्त्ता स्वयं आत्मा ही है, लेकिन पागल आदमी का पागलपन दूर हो जाने पर पागलपन के समय की चेष्टा उसी आदमी के द्वारा की हुई होने पर भी उसकी नहीं मानी जाती, पागल अवस्था में की गई मानकर न्यायाधीश भी उसको दण्ड नहीं देता, उसी प्रकार अज्ञान अवस्था में क्रोधादिक का कर्त्ता आत्मा के स्वयं के होने पर भी ज्ञान अवस्था में आने पर आत्मा को क्रोधादिक का कर्त्ता नहीं माना जा सकता, अज्ञान अवस्था के सभी कर्म ज्ञान अवस्था प्राप्त होने पर निर्जरित हो जाते हैं। यह बात समयसार गाथा 127 में कही गयी है-

अण्णाणमओ भावो अणाणिवो कुणदि तेण कम्माणि ।
णाणमओ णाणिस्स दु ण कुणदि तम्हा दु कम्माणि ।।127।।

अतः यह सिद्ध होता है कि ज्ञानी आत्मा केवलज्ञान रूप ही परिणमन करती है, अतः वह क्रोधादिक भावों की कर्त्ता नहीं है। क्रोधादिक भावों की कर्त्ता तो अज्ञानी, मिथ्यादृष्टि आत्मा है।

पर्याय अवस्था में आत्मा पर्याय स्वभावी होती है :

प्रत्येक द्रव्य उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य स्वरूप होने से पर्यायें धारण करता रहता है। आत्मा की प्रतिक्षण जो पर्याय बनती है वह भाव रूप होती है। ज्ञान अवस्था में आत्मा की ज्ञान रूप पर्याय होती है। अर्हन्त और सिद्ध भगवान का परिणमन ज्ञान रूप ही होता है। सम्यग्दृष्टि भी ज्ञान रूप परिणमन करता है। मिथ्यादृष्टि अज्ञानरूप परिणमन करता है, अतः कभी रागी, कभी क्रोधी, कभी द्वेषी, कभी मानी इत्यादि पर्यायों को धारण करता है।

आयु की दृष्टि से यह जीव मनुष्य, देव, नारकी और तिर्यंच पर्यायों को धारण करता है। इन सब भावों में जीव का स्वभाव भिन्न-भिन्न दिखाई देता है तथा स्वभाव के अनुसार परिणमन भी देखा जाता है। जैसे सर्प स्वभाव से लोभी और क्रोधी होता है, कबूतर अत्यधिक कामी होता है, स्त्री स्वभाव से मायाचारिणी होती है, गुड़ स्वभाव से मधुर एवं नमक स्वभाव से खारा होता है, नीम स्वभाव से कड़वा होता है।

लेकिन पर्याय धारण करने पर भी द्रव्य अपने स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता। अतः आत्मा का चेतन स्वभाव कभी नष्ट नहीं होता, अतः द्रव्य दृष्टि से गुणानुरूप तथा स्वभाव रूप ही परिणमन करता है निगोद अवस्था में भी जीव चेतन (ज्ञाता-दृष्टा) स्वभाव नहीं छोड़ता, चाहे उसका ज्ञान अक्षर का अनन्तवाँ भाग हीहो। देव और मनुष्य अवस्था में भी जीव चेतन (ज्ञाता-दृष्टा) स्वभाव वाला ही रहता है।

क्रमशः ....

आचार्य पद दिया

आचार्य ज्ञानसागर जी ने संबोधित कर कहा कि साधक को अंत समय में सभी पद का परित्याग आवश्यक माना गया है। इस समय शरीर की ऐसी अवस्था नहीं है कि मैं अन्यत्र जाकर सल्लेखना धारण कर सकूँ। तुम्हें आज गुरु-दक्षिणा अर्पण करनी होगी और उसी के प्रतिफल स्वरूप यह पद धारण करना होगा। गुरु-दक्षिणा की बात से मुनि विद्यासागर निरुतर हो गये। तब धन्य हुई **नसीराबाद (अजमेर) राजस्थान की वह घड़ी जब मगसिर कृष्ण द्वितीय, संवत् 2029, बुधवार, 22 नवम्बर, 1972 ईस्वी को आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने** अपने ही कर-कमलों से आचार्य-पद पर **मुनि श्री विद्यासागर महाराज** को संस्कारित कर, विराजमान किया। इतना ही नहीं मान-मर्दन के उन क्षणों को देखकर सहस्रों नेत्रों से आँसुओं की धार बह चली जब आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने मुनि श्री विद्यासागर महाराज को आचार्य-पद पर विराजमान किया एवं स्वयं आचार्य-पद से नीचे उतरकर सामान्य मुनि के समान नीचे बैठकर, नूतन आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के चरणों में नमन कर बोले - **''हे आचार्य वर! नमोस्तु, यह शरीर रत्नत्रय साधना में शिथिल होता जा रहा है, इन्द्रियाँ अपना सम्यक् कार्य नहीं कर पा रही हैं। अत: मैं आपके श्री चरणों में विधिवत् सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण धारण करना चाहता हूँ, कृपया मुझे अनुग्रहीत करें।''** आचार्य श्री विद्यासागर ने अपने गुरुवर की अपूर्व सेवा की। पूर्ण निमर्मत्व भावपूर्वक आचार्य ज्ञानसागर महाराज मरुभूमि में वि. सं. 2030 वर्ष की ज्येष्ठ मास की अमावस्या को प्रचण्ड ग्रीष्म की तपन के बीच में 4 दिनों के निर्जल उपवास पूर्वक नसीराबाद (राज.) में ही शुक्रवार, 1 जून 1973 ईस्वी को 10 बजकर 10 मिनट पर इस नश्वर देह का त्याग कर समाधिमरण को प्राप्त हुये।

गुरुदेव ने मुझे मोक्षमार्ग पर चलना सिखाया, गुरुदेव ने मुझे जीवन में जीना सिखाया ।
गुरुदेव की कृपा मैं कहां तक कहूं बन्धुओं, गुरुदेव ने ही मुझको, मेरा स्वरूप दिखाया ।।

जो मोक्षमार्ग पर खुद चलते और शिष्यों को चलाते उन्हें आचार्य कहते हैं।
जो शास्त्र को स्वयं पढ़ते और शिष्यों को पढ़ाते उन्हें उपाध्याय कहते हैं ।।
जो रत्नत्रय पालन में ज्ञान ध्यान में सदा लीन रहते हैं, उन्हें साधु कहते हैं ।
पर ये तीनों काम जो अकेले ही करते हैं, उन्ही को संत विद्यासागर कहते हैं।।

हमने अरहंत भगवान को देखा नहीं है, और सिद्ध भगवान कभी दिखते नहीं हैं।
इन दोनों का स्वरूप हमें आचार्य देव बताते हैं, अतः इन्हीं में हमें देव नजर आते हैं ।।
हर दिशायें दिनकर को जन्म नहीं देती, हर रात शरद पूनम के चाँद को जन्म नहीं देती।
होती है अन्य माताएँ भी हजारों जगत में, पर हर माता विद्यासागर जैसे संत को जन्म नहीं देती ।।

संकलन : सुशीला पाटनी, आर.के. हाउस, किशनगढ़

क्रोध से बचने के अनेक उपाय

डॉ. वीरसागर

क्रोध एक अत्यंत हानिकारक मनोविकार है। उससे हमें येन-केन प्रकारेण अवश्य बचना चाहिए। अन्यथा हमारा धार्मिक या आध्यात्मिक जीवन तो दूर, लौकिक जीवन भी सहजता के साथ नहीं चल पायेगा। जैनाचार्यों के अनुसार क्रोध को जीतने का वास्तविक उपाय यद्यपि एक आत्मानुभूति ही है, तथापि उन्होंने प्राथमिक दशा में क्रोध से बचने के अनेक उपाय निम्नानुसार भी बताये हैं, जिन्हें हम सुभाषित-रत्नसन्दोह, परमात्मप्रकाश-टीका, रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषावचनिका आदि अनेक ग्रन्थों के आधार से यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. यह मुझे दुर्वचन कह रहा है तो क्या हुआ? यह तो इसका स्वभाव ही है। मैं क्यों क्रोध करूँ? यदि कुत्ता काटे तो क्या बदले में हम भी उसे काटते हैं?
2. मेरे अशुभ कर्म का उदय है, मैंने भी पूर्व में कभी दूसरों को ऐसे दुर्वचन कहे होंगे। जैसे को तैसा यही कर्म सिद्धान्त है।
3. बड़े-बड़े महापुरुषों को भी दुर्जन लोग इससे अधिक बुरे वचन कहते हैं, पर वे शान्त रहते हैं, क्रोध नहीं करते। मुझे ऐसा कहा तो क्या हुआ?
4. शब्द तो ब्रह्म है। यह उनका दुरुपयोग कर रहा है। क्या करें, यह नासमझ है। अग्नि, जल पाषाण आदि तो सदुपयोग के लिए हैं, कोई उनका दुरुपयोग करे तो क्या किया जा सकता है?
5. मैने शास्त्रों में पढ़कर सीखा है कि क्रोध हानिकारक है, कदापि नहीं करना चाहिए। गाली सुनि मन खेद न आनो, आज मुझे उसे आचरण में उतारने का अवसर मिला है, यह मुझे निःशुल्क प्रयोगशाला प्राप्त हुई है। यह मेरे ज्ञान की परीक्षा की घड़ी है।
6. रोज चार रोटी पचाता हूँ, क्या इसके ये दो शब्द (गधा) भी नहीं पचा पाऊँगा। कुछ नहीं चलो, कुछ नहीं हुआ।
7. अरे इसने मुझे दो शब्द ही तो कहे हैं, बहुत अधिक तो कुछ नहीं कहा। कहने वाले तो जाने कितना-कितना गन्दा कह देते हैं और वह भी भरी सभा में।
8. जाकी जितनी बुद्धि हो, उतनी देय बताय। बाको बुरो न मानिए, और कहाँ से ल्याय ।।

9. इसे मेरे लिए अपने मुँह से कुछ कहा ही तो है, मेरा कुछ छीना तो नहीं। मेरे शरीर को तो कोई बाधा नहीं पहुँचाई।
10. शरीर को भी बाधा पहुँचाए तो भी क्षमा करना चाहिए कि मात्र इतनी सी बाधा पहुँचाई है, प्राण विनाश तो नहीं किया।
11. प्राण–विनाश करे तो भी क्षमा करना चाहिए कि मात्र इस शरीर का प्राण विनाश कर रहा है, मेरे आत्मिक गुणों (धर्म) का विनाश तो नहीं करता।

इस प्रकार शान्त मन से चिन्तवन करने से गाली सुनकर भी क्रोध से बचा जा सकता है। तथा इसी प्रकार अन्य भी क्रोध से विधि निमित्त मिलने पर भी क्रोध से बचा जा सकता है, सहज शान्त और संतुलित रहा जा सकता है।

अपकुर्वति कोपश्चेत, किं न कोपाय कुप्यसि।
त्रिवर्गस्यापवर्गस्य, जीवितस्य न नाशिने ।।

–आचार्य वादीभी सिंह, क्षत्रचूड़ामणि 2/42

हे भाई! यदि तुम बुरा करने वाले हम पर ही क्रोध करना चाहते हो तो इस क्रोध पर ही क्रोध क्यों नहीं करते हो? क्योंकि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप तुम्हारे सम्पूर्ण जीवन का विनाश करने वाला यह क्रोध ही तो है। इससे अधिक बुरा करने वाला अन्य कोई नहीं है।

आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम शिलान्यास समारोह

आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम शिलान्यास समारोह दांता–रामगढ़ जिला सीकर (राजस्थान) के श्री दिगम्बर अतिशय क्षेत्र नसियां जी में संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से दिनांक 07.03.2011 (तिथी फाल्गुन कृष्ण तृतीया) को आचार्य ज्ञानसागर व्रती आश्रम का शिलान्यास समारोह सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता के द्वारा सम्पन्न कराया गया।

–अध्यक्ष–सागरमल अजमेरा, मंत्री–हरकचंद झांझरी

विश्व शान्ति में युवा शक्ति की भूमिका

कु. आराधना जैन

गतांक से आगे ....

सृष्टि का जीवन सापेक्ष है। इसमें जड़ और चेतन जितने पदार्थ हैं, वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तथा एक दूसरे से प्रभावित होते भी हैं। पृथ्वी, जल, वायु और वनस्पति सृष्टि संतुलन के आधारभूत तत्व हैं, ये जैसे हैं, वैसे ही बने रहें तो सृष्टि का संतुलन बना रहता है। इनमें गड़बड़ी से असंतुलन का खतरा बना रहता है। सृष्टि में असंतुलन का मूल कारण असंयम हैं। मनुष्य अपनी आकांक्षाओं का विस्तार करता चला जा रहा है। और आकांक्षा पूर्ति हेतु पृथ्वी का बेहिसाब उत्खनन, जल का अधिक प्रयोग, औद्योगीकरण, वन कटाई, शिकार आदि कर रहा है, वह स्वयं यह सब करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। परिणामतः पर्यावरण प्रदूषण से त्रस्त हो रहे हैं। वायु प्रदूषण से सांस लेना दूभर कर दिया है। ग्लेशियर पीछे खिसकने से मौसम अचानक परिवर्तित हो जाता है। ग्लोबल वार्मिग जैसी नई समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं। भूकम्प, तूफान, अधिक सर्दी, अधिक गर्मी, अधिक बर्फवारी जैसे मौसम अनेक रोगों के जन्मदाता हैं जिससे अनेक प्राणियों की जीवन लीलाएं समाप्त हो रही हैं। ऐसे में पर्यावरणीय संतुलन हेतु संयम की साधना अपेक्षित है। पर्यावरण की सुरक्षा में ही प्राणी मात्र की सुरक्षा निहित है। युवा शक्ति अभियानों के नेतृत्वों से जनमानस को जागरुक कर सकती है। उन्हें वनस्पतियों, वृक्षों से लाभ आदि की शिक्षा दे सकते हैं। अहिंसक जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दे सकते हैं। पॉलिथीन पर रोक लगाकर कपड़ा व जूट के विकल्प को अपनाने की बात बतला सकते हैं। नदियों को अपवित्र करने से रोकने हेतु अभियान चलाकर पर्यावरणीय चेतना के विकास में सक्रिय भूमिका निभाकर शान्तिमय पर्यावरण बना सकते हैं जिससे पुनः प्राकृतिक शक्तियों से ढेरों अनुदान मनुष्य को मिल सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में युवा शक्ति की भूमिका – विश्व शान्ति को स्थायी बनाना है तो मानव की बौद्धिकता और नैतिकता सुदृढ़ होनी अति आवश्यक है। अज्ञानता और गलतफहमियां व्यक्तियों व राष्ट्रों के डर और भ्रम पैदा करती हैं। अतः अज्ञानता को दूर कर और परस्पर समझ को विकसित कर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का वातावरण बनाया जा सकता है। यह कार्य युवा शक्ति शिक्षा के माध्यम से कर सकती है। आज चरित्रवान युवा शिक्षकों की अति आवश्यकता है, जो आदर्श शिक्षा दे सकें। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। शिक्षा से मानवता का कल्याण और विस्तार भी कर सकते हैं। युवा शक्ति शिक्षा के साथ संस्कारों के प्रति भी सजग रहे। पहले स्वयं निर्व्यसनी बने तभी दूसरों को व्यसन मुक्त जीवन जीने का संदेश दे सकेंगे। युवा विद्यार्थी जीवन में करुणाशील नहीं होता है तो उसकी कूरता जगती है और उसके अन्दर हिंसा जन्म ले लेती है। युवा शक्ति बुरी आदतों को स्वयं देखें और चारित्रिक दृढ़ता प्राप्त करें। अपनी संस्कृति और संस्कारों को सुदृढ़ करने की ओर कदम बढ़ाएं।

शिक्षा के द्वारा निस्वार्थता का विकास कर निजीहितों को सामान्यहितों के लिए त्याग की भावना जगायें। युवाओं में आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करें जिससे कि वे पूर्व धारणाओं या अभिमतों के शिकार न होकर दूसरे मतों व दृष्टिकोणों के प्रति उदार व सहिष्णु बनें। युवा शक्ति ही यह बोध दे सकती है कि वर्तमान समय में अपने देश का संसार से पृथक होकर आस्तित्व नहीं है। आज का विश्व अत्यधिक सीमित होता जा रहा है। आवागमन के साधन, संचार की सुविधा, आर्थिक अन्तार्श्रितता, तकनीकी आदान-प्रदान, आवश्यकताओं की पूर्ति, औद्योगिकरण आदि एक राष्ट्र को दूसरे के निकट ला रहे हैं। सभी राष्ट्र एक-दूसरे पर आश्रित हैं। **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** सभी प्राणी एक-दूसरे को छोटा या बड़ा न समझे जिससे सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो। अन्य राष्ट्रों की संस्कृति का ज्ञान एवं उनका आदर कर सद्‌गुणों को विकसित कर शान्ति का संदेश दे सकते हैं।

राजनैतिक क्षेत्र में युवा शक्ति की भूमिका - स्वच्छ राजनीति वह है जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन नहीं होता। जहाँ व्यक्ति और राष्ट्र का सम्बन्ध मात्र यांत्रिक नहीं होता, व्यक्ति की स्वतंत्रता का मूल्यांकन किया जाता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता आत्मानुशासित होती है। ऐसी स्वतंत्रता व्यक्तिगत विशेषताओं का संरक्षण है जो राष्ट्र की समृद्धि की आवश्यक शर्त है। हिंसा की रोकथाम और विधि व्यवस्था कायम रखना मात्र राजनीति का कार्य नहीं है। आज राजनीति में पदलोलुपता, भ्रष्टाचार, जाति-धर्म के नाम पर हिंसा अंग बनते जा रहे हैं। आज की राजनीति ने व्यक्ति की हित और मानव कल्याण को बहुत गहरी क्षति पहुँचाई है। युवा शक्ति राजनीति में भूमिका निभा कर भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकती है। वह विकेन्द्रित राजनैतिक व्यवस्था का अवसर देकर दलगत राजनीति को दूर कर सकती है। वर्तमान राजनीति में राजनीतिज्ञों के प्रशिक्षण हेतु कोई व्यवस्था नहीं है, परिणाम स्वरूप गुणवत्ता के स्थान पर मात्र संख्या ही आधार है। व्यवस्था परिवर्तन के लिए संगठनात्मक प्रशिक्षण देकर अनुसंधान, योजना कार्य के लिए तैयार होना, प्रचार कार्य का प्रारम्भ नेतृत्व, अधिकारों, कर्तव्यों की शिक्षा, विभिन्न राष्ट्रों से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु समन्वय, सहिष्णुता, सहआस्तित्व, सापेक्षता आदि दृष्टियाँ युवा शक्ति देकर राजनीति के क्षेत्र में भूमिका निभाकर विश्व शान्ति में सहयोग दे सकती है। अपने नैतिक मूल्यों से अपने राष्ट्र की छवि अन्य राष्ट्रों में उज्ज्वल बनाकर राष्ट्र के गौरव में अहम भूमिका निभा सकती है।

मानवता व अन्य क्षेत्रों में युवा शक्ति की भूमिका - युवा शक्ति ने आज व्यवसाय, उद्योग, खेल, आध्यात्मिक, धार्मिक, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में ही सक्रिय भूमिका नहीं निभाई है वरन् मानवता की सेवा में भी अपने कदम बढ़ाये हैं। युवाशक्ति दीन दुःखी एवं जरुरतमंदों की सहायतार्थ नेत्र आदि शारीरिक उपकरणों की ओर लोगों को प्रेरित कर मानवता की सेवा में योगदान दे रही है। वृद्धाश्रम, बाल आश्रम, महिला आश्रम, कला प्रदर्शन आदि द्वारा समाज का कायाकल्प कर एक नई चेतना दे रहे हैं। संसार का सबसे बड़ा धर्म मानवता है और मानव होकर मानव के काम आना सच्ची मानवीयता है।

क्रमशः........

स्वास्थ्यप्रद आहार : अहिंसक आहार

गतांक से आगे ....

डॉ. बी.एल. बजाज

1. शाकाहार सुपाच्य है।

2. अत्यावश्यक विटामिनों की शाकाहार में बहुलता है।

3. आवश्यक तत्त्वों प्रोटीन, चिकनाई, कार्बोहाइड्रेट खनिज लवणों यथा कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा एवं कैलोरी इत्यादि की विभिन्न खाद्य पदार्थों में उपलब्धता के प्रस्तुत तुलनात्मक चार्ट (हेल्थ बुलेटिन नं. 23, भारत सरकार) से शाकाहार की महत्ता स्वत: सिद्ध होती है।

Food Value Chart पौष्टिक तत्व का तुलनात्मक चार्ट (हैल्थ बुलेटिन नं. 23 भारत सरकार)

पदार्थ का नाम Name of food stuff	Protein प्रोटीन %Gms	FAT चिकनाई %Gms	Mineral Matt खनिज लवण %Gms	Carbohydrate कार्बोहाइड्रेट %Gms	Calcium कैलशियम %Gms	Phosphorus फासफोरस %Gms	Iron लोहा %Gms	Calories कैलोरी %Gms
Green Gram मूंग	24.0	1.3	3.8	58.6	0.14	0.28	8.4	334
Black Gram उड़द	24.0	1.4	3.4	60.3	0.20	0.37	6.8	350
Red Gram अरहर (तुअर)	22.3	1.7	3.8	57.2	0.14	0.26	8.8	333
Lentil मसूर	25.1	0.7	2.1	59.7	0.13	0.25	2.0	346
Peas मटर	22.9	1.4	2.3	63.5	0.03	0.36	5.0	358
Bengal चना	22.5	5.2	2.2	58.9	0.07	0.31	8.9	372
Cow Gram लोभिया	24.6	0.7	3.2	55.7	0.07	0.49	3.8	327
Soya Beans सोयाबीन	43.2	16.5	4.6	20.9	0.24	0.69	11.5	432
Almond बादाम	20.8	58.9	2.9	10.5	0.23	0.49	3.5	655
Cashewnut काजू	21.2	46.9	2.4	22.3	0.05	0.45	5.0	596
Coconut नारियल	4.5	41.6	1.0	13.0	0.01	0.24	1.7	444
Gingili तिल	18.3	43.3	5.2	25.2	1.44	0.57	10.5	564
Groundnut मूंगफली	31.5	39.8	2.3	19.3	0.05	0.39	1.6	549
Pistachionut पिस्ता	19.8	53.5	2.8	16.2	0.14	0.43	13.7	626
Wainut अखरोट	15.6	64.5	1.8	11.0	0.10	0.38	4.8	687
Cumin जीरा	18.7	15.0	5.8	36.6	1.08	0.49	31.0	356
Kandanthippli पीपल	6.4	2.3	4.8	65.8	1.23	0.19	62.1	310
Fenugreek मेथी	26.2	5.8	3.0	44.1	0.16	0.37	14.1	333
Cheese पनीर	24.1	25.1	4.2	6.3	0.79	0.52	2.1	348
Ghee घी	-	98.0	-	-	-	-	-	900
Skimmed Milk Powder स्प्रेटा दूध पाउडर	38.3	0.1	6.8	51.0	1.37	1.00	1.04	357
(प्रत्येक 100 ग्राम में) मांसाहारी खाद्य {Flesh foods (Per 100 gms)}								
EGG अण्डा	13.3	13.3	1.9	-	0.07	0.22	2.1	173
Fish मछली	22.6	0.6	0.8	-	0.02	0.19	0.9	91
Mutton बकरी का माँस	18.5	13.3	1.3	-	0.15	0.15	2.5	194
Pork सुअर का माँस	18.7	4.4	1.0	-	0.03	0.20	2.3	114
Beef गाय का माँस	22.6	2.6	1.0	-	0.01	0.19	0.8	114

मांसाहार व अंडाहार के पक्ष में उनकी प्रोटीन बहुलता की दी जाने वाली दलील भी इस चार्ट से निराधार व लचर सिद्ध होती है। प्रोटीन अंडे में जहाँ मात्र 13.3% तथा मांस में 18.5% है वहीं मूंग में 24.0%, तथा सोयाबीन में 43.2% है। लोडेन्सिटी लिपोप्रोटीन (एल.डी.एल.) नामक घातक कॉलेस्ट्रोल जो हृदय धमनियों में जम कर उन्हें संकड़ी करने के लिए जिम्मेदार है, वह अंडों में अत्यधिक मात्रा में पाया जाता है। मांस व अन्य पशु आधारित वसा में भी यह प्रचुर मात्रा में होता है परन्तु वनस्पति आधारित खाद्य पदार्थों में यह नहीं के बराबर होता है। अत्यावश्यक ऊर्जा-दायक कॉर्बोहाइड्रेट्स जहाँ शाकाहार में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं (मूंग में 56.6% मटर में 63.5%) वहीं अंडे, मांस इत्यादि में बिल्कुल नहीं होते। अति महत्त्वपूर्ण खनिज लवण भी शाकाहार में ज्यादा पाए जाते हैं (मूंग में 3.6%, तिल में 5.2%, जीरे में 5.8%, अंडे में 1.9%, व मांस में 1.3%)। भोजन के पाचन, मल-निष्कासन में सहायक व आंतों के कैंसर तक को रोकने में सक्षम स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक (फाइबर) रेशा शाकाहार में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अंडे में साल्मोनोला नामक बहुचर्चित व बहु घातक बैक्टीरिया के अलावा कैम्पीलोबेक्टर नामक माइक्रोब भी पाया जाता है, तो आंतों के भयंकर रोगों के लिए जिम्मेदार है। यहाँ यह बताना भी अप्रासंगिक नहीं है कि अंडा मात्र में जीव है तथा 'शाकाहारी-अंडे' (Unfertilised eggs- अनिषेचित अंडे) मात्र एक छलावा है। (फर्टिलाइज्ड) निषेचित या (अनफर्टिलाइज्ड) अनिषेचित कोई भी अंडा शाकाहारी नहीं है। यह किसी वनस्पति स्त्रोत से प्राप्त नहीं होता है। अति-शाकाहारी तो दूध व दूध-जन्य पदार्थों को भी शाकाहार श्रेणी से अलग रखते हैं, परन्तु निश्चित ही ये अंडाहार व मांसाहार की श्रेणी में भी नहीं रखे जा सकते क्योंकि न तो उनमें उस प्रकार का जीव है न ही उस प्रकार इनसे जीव-हत्या होती है। हाँ, यह दूसरी बात है कि किसी भी पशु का दूध उसके अपने बच्चों के लिए है, परन्तु स्वार्थमयी आदमी से यह अपेक्षा तो की ही नहीं जा सकती कि वह पशु-पालन सिर्फ उस पशु के लिए ही करेगा, अतः उस पशु-बच्चे को पालने के बाद बचे दूध का आदमी द्वारा उपयोग निर्दयता की श्रेणी में भी नहीं आ सकता।

स्वास्थ्य विज्ञान को धता बताते कत्लगाहों के गंदगीपूर्ण वातावरण के कारण व जानवर के शरीर में पाए जाने वाली विभिन्न बीमारियों के कारण उपजे जहर व कीटाणु जानवर के मांस का हिस्सा बन जाते हैं। मृत्यु डर से ग्रसित जानवर की विभिन्न स्राव ग्रंथियों से कई तरह के हार्मोन्स स्त्रावित होते हैं, जो कैंसर-कारक तक हैं, वे मांस के हिस्से बन जाते हैं। ऐसे मांस के सेवन करने वाले भी उन बीमारियों से निश्चिय ही ग्रसित हो जाते हैं। विश्वभर में वैज्ञानिक आंकड़े मांसाहारियों व अंडाहारियों की तुलना में शाकाहारियों को ज्यादा स्वस्थ व दीर्घायु पाते हैं। जागरुक विकसित देशों में जीवन बीमा का प्रीमियम शाकाहारियों के लिए उनकी अधिक स्वास्थ्य संभावनाओं के मद्देनजर कम रखा जाता है।

क्रमशः...........

जैन तीर्थंकर और उनके लांछन

डॉ. श्रीमती अल्पना जैन मोदी

जैन परम्परा के अनुसार जैन धर्म शाश्वत है। यह विश्व का एक महान धर्म भी है, दर्शन भी है। जैन मान्यतानुसार जैन धर्म का प्रतिपादन चौबीस तीर्थंकरों द्वारा किया गया।[1] इनका जन्म विभिन्न कालों में एक दूसरे से बहुत अधिक लम्बी अवधि के बाद वास्तविकता से अनभिज्ञ लोगों के मध्य सम्यक् श्रद्धा, सम्यक्ज्ञान, सम्यक् आचरण के मार्ग के प्रचार द्वारा मानव के लिए निर्वाण या मोक्ष का मार्ग खोलने के उद्देश्य से हुआ।[2] तीर्थंकर जैन धर्म का एक परिभाषिक शब्द है, जिसका भाव है धर्मतीर्थ को चलाने वाला अथवा धर्मतीर्थ का प्रवर्तक।[3] तीर्थ का अर्थ है आगम और उस पर आधारित चतुर्विध संघ; जो आगम और चतुर्विध संघ का निर्माण करते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं।[4]

जैनागम के अनुसार प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकर क्रमशः होते हैं। अतीत के अनन्त काल में अनन्त तीर्थंकर हुए हैं, वर्तमान में ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर हुए और भविष्यकाल में भी चतुर्विंशति तीर्थंकर होंगे।[5] जैन मान्यतानुसार भूत, वर्तमान तथा भविष्य के ये सभी तीर्थंकर धर्म के मूल स्तम्भ स्वरूप शाश्वत सत्यों का समान रूप से प्ररूपण करते रहे हैं, कर रहे हैं और करते रहेंगे।[6] सार रूप में चौबीस तीर्थंकरों की धारणा को जैन धर्म की धुरी कहा जा सकता है।[7]

तीर्थंकरत्व के गौरव से वे महापुरुष मंडित होते हैं जो कठोर तपस्या, संयम, आत्म मनन तथा साधना द्वारा अपनी इन्द्रियों व समस्त विकारों पर विजय पाकर जिनत्व को उपलब्ध कर लेते हैं और कैवल्य (केवल ज्ञान) प्राप्त कर निर्वाण के अधिकारी बनते हैं। तीर्थंकर अपनी इसी सामर्थ्य के साथ जगत के अन्य प्राणियों के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अतएव वह मोक्षमार्ग के प्रवर्तक युग पुरुष होते हैं।[8] जैन धर्म में तीर्थंकरों का विशिष्ट पूज्यनीय स्थान है, उन्हें आराध्य देव, सर्वज्ञ, धर्म प्रतिपादक, मार्गदर्शक आध्यात्मिक दृष्टि से महान तथा मुक्त आत्मा आदि कहा गया है।[9]

तीर्थंकर भगवान का शरीर सर्वसुलक्षण सम्पन्न होता है। जन्मकाल के दस अतिशयों में से 'सौलक्षण्य' नामक अतिशय के कारण उनका शरीर 1008 लक्षणों द्वारा शोभित होता है। सामुद्रिक शास्त्रानुसार 1008 चिन्हों में शंख, चक्र, गदा आदि 108 लक्षण तथा तिल, मसक आदि 900 व्यञ्जन होते हैं। 1008 लक्षणों में से उनके दाहिने पैर के अंगूठे में एक चिन्ह होता है, जिसको लांछन कहते हैं।

लांछनों से संबंध में साहित्यिक दृष्टि से विभिन्न मत पाये जाते हैं। त्रिकालवर्ती महापुरुष के अनुसार ज्ञातव्य है कि इन्द्र तीर्थंकर के जन्माभिषेक के समय उनके दाहिने पैर के अंगूठे पर जो चिन्ह देखता है, उसी को उनका लांछन निश्चित कर देता है।[10] अभिधान चिंतामणि में उल्लेख किया गया है कि इन्द्र जन्माभिषेक के लिए तीर्थंकर को सुमेरु पर्वत पर ले जाते हैं। अभिषेक के समय उनके शरीर पर

जिस वस्तु की रेखाकृति देखता है, उसी को उनका लांछन घोषित कर देता है।[11] जैन तत्त्वविद्या में वर्णित है कि अभिषेकोपरान्त तीर्थंकर बालक के दाये पैर के अंगूठे पर अंकित लक्षण को देखकर सौधर्म इन्द्र उसे भगवान का लांछन घोषित करता है। जैन परम्पराओं के अनुसार समस्त तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रिय वंशों में हुआ था। अतः उनकी ध्वजाओं पर प्रतीकों से उनकी संज्ञान चिन्ह माने जाते थे।

पं. प्रवर आशाधर जी का मानना है कि प्रत्येक जिन की क्षत्रिय कुटुम्ब से या वंश से उसका लांछन हो गया।[12] भागचन्द्र जैन उल्लेख करते हैं कि ये लांछन तीर्थंकर के नाम, वंश, गौत्र और जाति के आधार पर निश्चित किये गये होंगे।[13] श्वेताम्बर हेमचन्द्र चौबीस जिनों के लांछनों को अर्हतम् ध्वजः से अभिधारित करते हैं।[14] जैन धर्म की दिगम्बर तथा श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में तीर्थंकरों के लांछनों का विधान मान्य है। दोनों परम्पराओं के अनुसार चौबीस वर्तमानकालिक तीर्थंकरों के लांछनों का विवरण तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है। चतुर्विंशति तीर्थंकर लांछन नैतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से संदेश प्रद हैं। वृषभ से सिंह तक समस्त लांछन मानव की प्रगति और उसकी मनीषा का इतिहास है। प्राकृतिक और मानवकृत जीवन में संगति-साम्य उत्पन्न करने हेतु इन लांछन/चिन्हों का आयोजन किया गया है।[15]

क्रमशः ....

अमृत कहाँ ?

विद्वानों से चर्चा हुई कि अमृत कहाँ है? एक विद्वान ने कहा कि – 'अमृत शहद में है।' क्योंकि वह मीठा होता है। दूसरे विद्वान ने कहा – नहीं, अमृत चन्द्रमा में होता है क्योंकि शरद पूर्णिमा के दिन अमृत बरसता है और उसमें मधुर शान्ति है। तीसरे ने कहा नहीं, चन्द्रमा कलंकी है, उसमें अमृत कैसे हो सकता है, अमृत तो समुद्र में है क्योंकि समुद्र मंथन के समय उसमें देवताओं को अमृत मिला था। चौथा विद्वान बोला – ''समुद्र में अमृत हो ही नहीं सकता। क्योंकि वह खारा है। अमृत तो स्वर्ग में इन्द्र भगवान के पास है।'' पांचवा विद्वान व्यक्ति बोला – यह सब तर्क झूठे हैं। अमृत इन्द्र के पास नहीं, लक्ष्मी के पास है। जिसकी माया में सारा संसार लिपटा हुआ है। छठवें व्यक्ति ने अपना तर्क देते हुए कहा कि यदि अमृत लक्ष्मी के पास होता तो साधु-सन्त उसका त्याग नहीं करते। सभी विद्वानों ने निर्णय लिया कि इसका समाधान किसी साधु से पूंछते हैं। सभी विद्वान साधु के पास पहुँचेऔर अमृत कहाँ है इसका समाधान चाहा। साधु महाराज ने कहा- अमृत उन व्यक्तियों के मुख में है जो (हित, मित, प्रिय) मीठी वाणी बोलते हैं। हर्ष ध्वनि के साथ सभी विद्वानों ने इसका समर्थन किया। सभी विद्वानों को समाधान मिल गया और साधु महाराज की जय जयकार करते हुए चल दिये।

श्रीमती डॉ. अल्पना जैन मोदी

अहिंसा एवं शाकाहार विद्वत् संगोष्ठी

पंच कल्याणक के शुभ अवसर पर प्रथम बार ग्राम दाँता, तहसील दाँता रामगढ़ में परम पूज्य आचार्य संत शिरोमणि 108 श्री विद्यासागर के धर्म प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 आजर्वसागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं सानिध्य में सम्पन्न ''अहिंसा-शाकाहार-सम्मेलन एवं विद्वत् संगोष्ठी'' का आयोजन स्थानीय श्री निर्मल कुमार जी झांझरी की अध्यक्षता में हुआ। दीप प्रज्ज्वलन श्री महावीर प्रसाद-राजकुमार काला, दाँता (कलकत्ता) निवासी ने किया।

बाहर से पधारे हुये विद्वत्गण में विशिष्ट अतिथि डॉ. देवकुमार जी जैन (प्रमुख वैज्ञानिक, सहायक महानिर्देशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, एवं दिल्ली) एवं मुख्य अतिथि डॉ. पी.सी. जैन, जयपुर (अध्यक्ष, जैनोलोजी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर) ने शाकाहार ही उत्तम आहार है इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण सहित समझाकर ग्राम-वासियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता का महत्व बताया। वर्तमान समय में शुद्ध शाकाहार जीवन-शैली को भूलकर लोगों में पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने की होड़-सी लगी है। जो मानव को धर्म के रास्ते से तो विमुख करती ही है एवं स्वास्थ्य का भी विनाश करती है। अतः हमें भगवान महावीर के जीओ और जीने दो के दिव्य संदेश को अपने जीवन में उतारना है एवं अपने धर्म एवं स्वास्थ्य की रक्षा करते हुये शाकाहार-जीवन शैली को ही अपनाना चाहिये। मुनि श्री ने भी शाकाहार के विभिन्न गुणों पर प्रकाश डालकर लोगों को लाभान्वित किया।

गोष्ठी में अन्य विद्वत्गण जयपुर से : डॉ. पी.सी. जैन, मालवीय नगर, डॉ. शीतलचन्द्र जी जैन, मानसरोवर, डॉ. बी.एल. बजाज, मालवीय नगर, डॉ. जगेश जी जैन, हिंगुनिया, डॉ. किरन गुप्ता, बापू नगर, डॉ. महेन्द्र जी जैन, जोबनेर, डॉ. नवीन जी जैन (योगाचार्य) बरेली, डॉ. संजय जी जैन, पथरिया, दमोह, डॉ. श्रीमती कला काशलीवाल, ब्र. श्री जिनेश जी जैन, जबलपुर, पं. संजय जी जैन शास्त्री, छतरपुर, ब्र. नरेश जी, जबलपुर, पं. महेश जी, डीमापुर, श्री देवेन्द्र जी जैन, कलकत्ता से पधारे। डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, इंजीनियर महेन्द्र जैन, डॉ. नरेन्द्र जैन, भोपाल ने भी अहिंसा एवं शाकाहार के गुणों के बारे में लोगों को बताकर काफी प्रभावित किया जिसे सुनकर स्थानीय उप सरपंच श्री ओमेन्द्र सिंह जी (राजपूत) ने माँसाहार का त्याग कर दिया।

गोष्ठी में मंगलाचरण (1) तमिलनाडु की व्रती बहनों ने और (2) कवि चन्द्रसेन, भोपाल ने किया। डॉ. देवकुमार जी जैन, नई दिल्ली ने जैनागम संस्कार (तमिल भाषा में) का साहित्य विमोचन करवाया। भाव विज्ञान (नया अंक) का विमोचन विद्वत्गणों के द्वारा किया गया। गोष्ठी में आये हुये अतिथियों का सत्कार श्री महावीर प्रसाद काला (कलकत्ता) वालों ने नारियल, माला, दुपट्टा, मोमेन्टो, फाइल देकर किया तथा कार्यक्रम को सफल बनाया।

संयोजक : श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता

दाँता में भव्यता से सम्पन्न हुआ पंचकल्याणक महोत्सव

''श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन नसियाँ जी दाँता तहसील दाँता-रामगढ़, जिला सीकर (राज.) में अभूतपूर्व श्रीमद् जिनेन्द्र जिनबिम्ब मानस्तम्भ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं भव्य जिनेन्द्र रथ

शोभायात्रा''। परम पूज्य आचार्य संत शिरोमणि 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के शुभ आशीर्वाद से उनके जिनधर्म प्रभावक अध्यात्मयोगी शिष्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के ससंघ के पावन सान्निध्य में भारत के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठाचार्य पं. श्री जिनेश जी शास्त्री तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य श्री नरेश भैया द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2011 से 27 फरवरी 2011 तक मंत्रोच्चारण सहित सानंद निर्विघ्न संपन्न हुआ। पंचकल्याणक महोत्सव के कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण की प्रस्तुति -

20 फरवरी, रविवार : ध्वजारोहण एवं घटयात्रा

प्रातः 6.30 बजे से जाप आरम्भ विधि एवं ध्वजारोहण के साथ पंचकल्याणक महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। मौसम अचानक बदल गया, बादल घिर आये, हवायें चलने लगी पर दाँता निवासी मौसम के बदलाव से तनिक भी विचलित नहीं हुए। आध्यात्मिक भावनाओं से ओत-प्रात दाँता निवासी अति प्रसन्न थे। सभी महिलाएँ अपने माथे पर मंगल-कलश लेकर केशरिया परिधान पहने हुए तथा साथ ही सैकड़ों पुरुष, बच्चे, जैन अजैन सभी अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ चल रहे थे। विशाल घट-यात्रा का जुलूस जब पण्डाल में पहुँचा तब पूरी नगरी मानों धर्ममय हो गयी। भक्ति के नगाड़े गूँजने लगे। प्रतिष्ठाचार्य पं. ब्र. श्री जिनेश जी शास्त्री (जबलपुर) की देखरेख में संपूर्ण कार्यक्रम मंदिर में वेदी शुद्धि, कलश शुद्धि, मण्डप शुद्धि, मानस्तम्भ शिखर शुद्धि आदि का कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् ध्वजारोहणकर्त्ता श्री संतोष कुमार जी सेठी एवं श्रीमती ललिता सेठी दाँता निवासी, कलकत्ता प्रवासी ने अपने पूरे परिवार के साथ ज्योंही जिन-धर्म पताका फहराई तो मानों वर्षा की बूदों के जरिये गुरुवर के आशीर्वाद का शुभ संकेत हुआ, ध्वजा उत्तर की ओर मुख करके लहराने लगी। महाराज श्री ने कहा कि उत्तर की ओर ध्वजा का लहराना अत्यंत ही शुभ होता है, दाँता ग्रामवासियों एवं सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की भावना भाते हुए कार्यक्रम सम्पन्न होगा। प्रतिष्ठाचार्य ने सकलीकरण, अंकन्यास, इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप प्रतिष्ठा, भक्तामर विधान आदि कार्य अत्यंत आनंद के साथ सम्पन्न किये। महाराज श्री के प्रवचनों की अमृतवर्षा भी हुई। जिसमें सभी ने पंचकल्याणक महोत्सव के महात्म्य को समझा। 6.30 बजे शाम को महाआरती, भजन, विद्वानों द्वारा प्रवचन एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

21 फरवरी, सोमवार : गर्भ कल्याणक - पूर्व रूप

ध्वजारोहण एवं घटयात्रा के पश्चात् पंचकल्याणक महोत्सव का यह दूसरा दिन था। इसमें गर्भ कल्याणक का पूर्व रूप दिखाया गया। प्रातः 6.30 बजे से नित्य-नियम अभिषेक, पूजन, याग मण्डल विधान, हवन, मुनिश्री के मांगलिक प्रवचन, वेदीशुद्धि मानस्तम्भ शुद्धि आदि कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा सानंद सम्पन्न हुए। दाँता ग्रामवासियों के उत्साह और बाहर से पधारे हुए यात्रीगण के आगमन से पूरे पंडाल में जिनधर्म के जयकारे गूँजने लगे तब ऐसा लगने लगा मानों साक्षात् पंचकल्याणक महोत्सव इन्द्रों द्वारा मनाया जा रहा है। शाम 6.30 बजे से संगीतमय महाआरती (संगीतकार सुधीर जैन एण्ड पार्टी, सागर) सम्पन्न होने के बाद भजन, प्रवचन आदि कार्यक्रम संपन्न हुए। तत्पश्चात्, सौधर्म इन्द्र श्री निर्मल जी झांझरी एवं इंद्राणी (श्रीमती किरण झांझरी) की सुधर्मा सभा, कुबेर (श्री नरेन्द्र जी गोधा एवं इन्द्राणी श्रीमती पुष्पा गोधा) द्वारा रत्न वृष्टि एवं

अयोध्या की रचना, अष्ट कुमारियों द्वारा माता मरुदेवी की सेवा एवं सोलह स्वप्न देखना तथा रात्रि 11 बजे से गर्भ-कल्याणक की आंतरिक क्रियायें सम्पन्न हुयी।

22 फरवरी, मंगलवार : गर्भ कल्याणक का उत्तर रूप

नित्य-नियम पूजन के पश्चात् गर्भ-कल्याणक की पूजन संपन्न कराई गई। मुनिश्री के पावन प्रवचन एवं आहार पश्चात् दोपहर 2 बजे से माता मरुदेवी की गोद भराई (सीमंतनी क्रिया) का अत्यंत भव्य एवं रोचक कार्यक्रम हुआ। केसरिया परिधान में शोभित समाज की सभी महिलाओं ने सुन्दर-सुन्दर भेंट, आभूषण, वस्त्र, मेवे आदि से माता की गोद भराई की। माता मरुदेवी ने भी खुश होकर सभी महिलाओं को केसरिया साड़ी की भेंट देकर खुश कर दिया। शाम 6.30 बजे पुनः संगीतमय महाआरती का कार्यक्रम हुआ, जिसे देखकर सम्पूर्ण जन-समुदाय मंत्र मुग्ध हो गया। तत्पश्चात् प्रतिष्ठाचार्य श्री जिनेश जी शास्त्री द्वारा सारगर्भित प्रवचन प्रस्तुत किया गया। रात्रि 9 बजे महाराजा नाभिराय का दरबार सजा। गर्भ कल्याणक का उत्तररूप मंच पर प्रस्तुत किया गया । माता मरुदेवी (श्रीमती सुलोचना झांझरी) ने जो सोलह स्वप्न देखे थे प्रातः उन स्वप्नों के फल को जानने की इच्छा के अभिप्राय से अपने पति महाराजा नभिराय के पास जाती है। स्वप्नों को सुनकर तीर्थंकर के पिता (श्री कल्याण जी झांझरी) अवधिज्ञान से विचार कर उन स्वप्नों का अर्थ बताते हैं। वे कहते हैं कि हे देवि! तुमने जो स्वप्न देखे हैं उनका फल अति उत्तम है। एक-एक करके सभी स्वप्नों का फल बताते हुये महाराजा नभिराय कहते हैं कि अंत में मुख में प्रविष्ट होते हुए जो तुमने उत्तम वृषभ देखा है उसका फल यह है कि तुमने तीनों लोकों के प्रधान तीर्थंकर को अपने गर्भ में धारण कर लिया है। तीर्थंकर भगवान के गर्भावतारण का समय जानकर स्वर्ग के सभी इन्द्र अयोध्या नगरी आते हैं और गर्भ में स्थित जिन-भगवान को एवं माता-पिता को नमस्कार कर संगीत एवं वाद्ययन्त्रों से समस्त पृथ्वी लोक को गुंजायमान करते हुए गर्भोत्सव सम्पन्न कराते हैं एवं माता की सेवा में तत्पर अष्ट देवियाँ एवं छप्पन कुमारियों को नियुक्त कर देव पुनः स्वर्ग चले जाते हैं। सेवा में रत देवियाँ एवं कुमारियाँ सब तरह से माता का ध्यान रखती हैं एवं विभिन्न तत्त्वचर्चा एवं छोटी-छोटी सरस बातों से तथा भेंट देकर माता को रिझाती हैं। माता भी खुश होकर सभी को गले लगाती हैं। इस प्रकार देवियाँ गर्भ से लेकर जन्म तक माता की परिचर्या में लीन रहती हैं।

23 फरवरी, बुधवार : जन्म कल्याणक

प्रातः नित्य नियम अभिषेक पूजन सभी इन्द्रों-इंद्राणियों के द्वारा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। नशियां जी का विशाल मंडप धर्मानुरागी बंधुओं से खचाखच भरा हुआ था और बालक तीर्थंकर के जन्म का बड़ी ही आतुरता के साथ इंतजार कर रहे थे। ठीक 6.30 बजे प्रातः जब तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ तो पूरा माहौल भगवान आदिनाथ के जय-जयकारों से गुँजायमान हो गया। बधाईयों के मधुर संगीत गूँजने लगे, हजारों प्रकार के वाद्य-यन्त्रों की ध्वनि से पूरा नगर आनंद सागर में डूब रहा था। महाराजा नाभिराय सारे खजाने खोल कर याचकों को भेंट देकर प्रसन्न किया। तत्पश्चात् अभिषेक के बाद पूजा संपन्न होने के बाद सौधर्म इन्द्र एवं इन्द्राणी तीर्थंकर के जन्माभिषेक के लिए ऐरावत हाथी पर सवार होकर पांडुक शिला पर पहुँचे। सौधर्म इन्द्र

और इन्द्राणी ने पांडुक-शिला की तीन प्रदिक्षणा कर बालक तीर्थंकर को पांडुक शिला पर विराजमान किया तथा पांडुक शिला की पूजा अर्चना प्रतिष्ठाचार्य श्री जिनेश जी शास्त्री के निर्देशन में सम्पादित की। तीर्थंकर बालक का कलशाभिषेक करके सभी इन्द्र धन्य हो गये। 1008 कलशाभिषेक कार्यक्रम करीब 2 घंटे तक चला। फिर आसमान से हेलीकाप्टर द्वारा पुष्प-वृष्टि श्री महावीर प्रसाद - राजकुमार काला आदि लोगों के द्वारा की गई। यह शोभा यात्रा दाँता ग्राम-वासियों के लिये चिर-स्मरणीय रहेगी। तत्पश्चात् करीब 3 बजे बालक कुमार को सौधर्म इन्द्राणी ने माता मरुदेवी को सौंपा। उस समय सौधर्म इन्द्र ने तांडव नृत्य करके जन्मोत्सव की खुशी का अपूर्व परिचय दिया। मुनि श्री आर्जवसागर जी ने जन्मोत्सव का महात्म्य अपने प्रवचन में सभी जनवासियों को बताया और कहा कि तीर्थंकर जीवन में ऐसा पुनीत अवसर तीर्थंकर प्रकृति कर्म के उदय में आने पर होता है यह संस्कार हमारी आत्मा में परमात्मा बनने के संस्कारों का बीजारोपण करती है। सायं रात्रि 6.30 बजे से संगीतमयी आरती सम्पन्न होने के पश्चात बालक आदिकुमार का पालना झुलाने के लिये हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। बालक का पालना झुलाकर तथा बच्चों ने कुमार बालक के साथ बालक्रीड़ा कर अपूर्व आनंद लिया।

24 फरवरी, गुरुवार : तप कल्याणक

नित्य-नियम अभिषेक, पूजन पश्चात् मुनिश्री आर्जवसागर जी ने भगवान के तप-कल्याणक के विषय में बहुत ही सार-गर्भित प्रवचन सुनाकर संसार की असारता से परिचित कराया। दोपहर पश्चात् महाराज नाभिराय का दरबार सजाया गया। युवराज कुमार का राज्याभिषेक, राज्य व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था, षट्-कर्म व्यवस्था का पालन, दण्ड व्यवस्था तथा 32 हजार मुकुटबद्ध राजाओं द्वारा राजकुमार आदिनाथ को भेंट समर्पण, ब्राह्मी, सुन्दरी को अक्षर-ज्ञान एवं अंक विद्या का बोध कराना आदि कार्यक्रम अत्यंत रोचकता से दर्शाये गये। अंत में नीलाजंना का नृत्य प्रस्तुत किया गया एवं उसका तत्काल मरण होना तथा इन्द्र द्वारा तत्काल दूसरी नीलांजना का नृत्य प्रस्तुत करना, उस कारण से महाराज आदिनाथ को वैराग्य हो गया। उन्होंने भरत और बाहुबली को राज्य सौंपकर, सारा राज-वैभव छोड़कर मुनि दीक्षा धारण करने के भाव तथा लौकांतिक देवों द्वारा भगवान के वैराग्य-भावों की प्रशंसा, स्तुति और भगवान दीक्षा वन के लिये प्रस्थान के लिये तैयार हुये, तब देव और पृथ्वीलोक के राजाओं में पहले भगवान की पालकी कौन उठायें इस विषय में जो संवाद हुआ वह भी दर्शाया गया। तत्पश्चात् मुनि श्री आर्जवसागर ने बताया कि प्रभु ने इस समस्या का समाधान ऐसे दिया कि जो संयम-धारण करने की योग्यता रखता है वही श्रेष्ठ मनुष्य ही पहले पालकी उठायेगा। इसके बाद मुनिश्री ने दीक्षा विधि सम्पन्न की और लोगों ने पिच्छिका देते समय पूजन इत्यादिक नियम धारण किये। ये सारे दृश्य बहुत ही मनमोहक ढंग से प्रस्तुत कर मंच का संचालन कर रहे प्रतिष्ठाचार्य ने कहा कि हम भी महाराज आदिनाथ की तरह संसार की असारता को समझें और अपने आत्म-कल्याण की भावनाओं को भाते हुये आत्म पुरुषार्थ में लगे रहें तो एक दिन हम भी अपने आत्म-स्वरूप को प्राप्त कर सकते हैं।

25 फरवरी, शुक्रवार : ज्ञान कल्याणक

प्रातः 6.30 बजे नित्य-नियम पूजन, अभिषेक पश्चात् महाराज श्री के प्रवचन तथा मुनि ऋषभसागर

की आहार-चर्या, राजा श्रेयाँस एवं सोमप्रभ के महल (हस्तिनापुर) का दृश्य दिखाया गया। महिलाओं में होड़ सी मची हुयी थी मुनि ऋषभसागर को आहार दान देने की, सभी ने आहार दान कराकर अपने को धन्य समझा। समस्त वातावरण में अनोखी शांति अनुभव हो रही थी। लगता था संसार-सागर में छूटने के भाव लोगों में तैरने लगे बड़ा ही सौम्य एवं हृदय को छू लेने वाला वातावरण था। घोर तपश्चर्या करते हुये तीर्थंकर प्रभु जब ध्यान के समय क्षपक-श्रेणी में पहुँचकर शुक्लध्यान में लीन हो जाते हैं तब चार घातिया कर्मों का क्षयकर केवलज्ञान की प्राप्ति कर लेते हैं। ऐसा दृश्य देखना दुर्लभ होता है पर यहाँ की जनता ने साक्षात् इस दृश्य का अवलोकन किया ऐसा महसूस हुआ। अब सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनपति कुबेर कैसे समवशरण की रचना करता है? अर्चना करता है आदि दृश्य दिखाये गये। समवशरण में भगवान की कल्याणकारी वाणी सुनकर अनेक सम्यग्दृष्टि जीवन संयम धारण कर मोक्ष पुरुषार्थ में लीन हो जाते हैं। ऐसे विहंगम दृश्य की प्रस्तुति बहुत ही सुन्दर थी। मुनिश्री आर्जवसागर जी गणधर के रूप में विराजमान हुये एवं श्रावक लोगों ने अनेक प्रश्न पूछे एवं समाधान प्राप्त किये।

26 फरवरी, शनिवार : मोक्ष कल्याणक

सभी दैनिक-कार्यक्रम पूजन, प्रवचन आदि भगवान के मोक्ष-कल्याणक दृश्य के दिखाये जाने के बाद सम्पन्न हुये। मुनिश्री ने कहा कि जब भगवान की आयु कुछ ही समय शेष रह जाती है तब समवशरण विघटित होता है। ज्ञान-देशना रूपी सूर्य के अस्त हो जाने के बाद तीर्थंकर देव अघातिया कर्मों का भी क्षय कर देते हैं। तत्पश्चात् अल्पकाल के भीतर वे अयोगजिनवर आत्म-विकास की चरम अवस्था, सिद्ध पद को प्राप्त कर लेते हैं। इस दिन मध्यान्ह में हुयी ''अहिंसा शाकाहार सम्मेलन रूप संगोष्ठी'' अत्यंत सराहनीय रही, जिसमें अनेक विद्वानों ने एवं अंत में मुनिश्री ने अहिंसा शाकाहार पर प्रकाश डाला। रात्रि में किशनगढ़-रेनवाल की पाठशाला द्वारा ''अहिंसा परमो धर्म'' पर नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसकी सभी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

27 फरवरी, शनिवार : मानस्तम्भ का महामस्तकाभिषेक

आज अंतिम दिन था, पंचकल्याणक महोत्सव का। मानस्तम्भ के महामस्तकाभिषेक की तैयारियाँ बहुत ही उल्लास-पूर्वक चल रही थी। स्थानीय एवं प्रवासी लोगों ने भी कलश किये। दाँता निवासी एवं गुवाहाटी प्रवासी छाबड़ा-परिवार ने इस मानस्तम्भ का निर्माण करवाकर एवं पूजा, अर्चना कर अपने व अपने पूर्वजों के आत्म-सम्मान को भी धर्म की भावनाओं से ओत-प्रोत कर दिया।

सभी बहुत ही प्रसन्न थे पर यहाँ से विदा भी होना है यह भाव प्रवासियों को विचलित कर रहा था पर श्रीजी की विशाला शोभायात्रा से सभी मानों अपने आप को भूलकर भगवान के जय-जयकारे के नाद के साथ अपने-आप को कृत-कृत्य अनुभव कर रहे थे।

दिन में 2 बजे से मुनिश्री के सानिध्य में तथा रात्रि 8 बजे से कवि-सम्मेलन का रोचक कार्यक्रम था। कवि चन्द्रसेन आदि ने हम सभी के धार्मिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुये, अपने कविता कहने के अनूठे ढंग से हम सभी ग्राम-वासियों का मनोरंजन एवं आत्मरंजन किया, जो अविस्मरणीय रहेगा।

इस तरह पूज्य मुनि श्री आर्जवसागर जी के सानिध्य में सम्पन्न पंचकल्याणक महोत्सव दाँता के इतिहास में कभी न भूलने वाला ऐतिहासिक महोत्सव बन गया। सभी इन्द्रों, यज्ञनायक आदि ने इस महोत्सव को सफल बनाकर बहुत पुर्ण्याजन किया। पंचकल्याणक महोत्सव के दीप-प्रज्ज्वलनकर्ता एवं पूरे 8 दिनों तक का वात्सल्य भोजन श्री पूरनमल राजकुमार काला (कलकत्ता) वालों के द्वारा सम्पन्न हुआ।

संकलनकर्ता : श्रीमती प्रमिला देवी कासलीवाल

श्री पार्श्वनाथ ट्रस्ट, उदयपुर

गत ग्रीष्म ऋतु में समाज के श्री पार्श्वनाथ ट्रस्ट, उदयपुर ने यह पाया कि राजस्थान में जल समस्या के कारण दिगम्बर जैन मन्दिरों में सुबह की जाने वाली प्रक्षाल तथा अन्य कार्यों के लिए भी जल की व्यवस्था करना मुश्किल हो रहा था। मन्दिरों के जल स्रोतों में जल की मात्रा बहुत कम हो गई थी। यह समस्या करीब-करीब प्रत्येक ग्रीष्मऋतु में उत्पन्न होती है। ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा ब्यावर शहर के मन्दिरों में पाया कि एक मन्दिर में नलकूप ढस गया था। दो कुओं में जल की मात्रा बहुत कम हो गई। यह सोचा गया कि दिगम्बर जैन मन्दिरों की इस समस्या का दीर्घकालिन समाधान निकलवाना अति आवश्यक है। ट्रस्ट द्वारा ब्यावर शहर के जलप्रदाय विभाग के अघिशासी अभियन्ता श्री विपिन जैन से इस बारे में राय माँगी। श्री जैन के तकनीकी सहयोग से ब्यावर के मन्दिरों में वर्षा का जल संग्रहण की संरचना स्थापित की। इसके स्थापित होने से मन्दिर की छत पर गिरने वाले वर्षा जल को फिल्टर कर साफ कर जल स्रोतों के माध्यम से जमीन के अन्दर उतारा जाता है। इससे भूजल स्तर बढ़ता है तथा ग्रीष्म ऋतु में भी जल की उपलब्धता बनी रहती है। ट्रस्ट के द्वारा शीघ्र ही जयपुर तथा उदयपुर के मन्दिरों में वर्षा जल पुर्नभरण संरचना का निर्माण हाथ में लिया जा रहा है। श्री जैन द्वारा बताया गया कि मन्दिर की तथा इसके आसपास के कुछ मकानों में यह तकनीक अपना ली जावें तो क्षेत्र में पेयजल समस्या का हल निकाला जा सकता है। श्री पार्श्वनाथ ट्रस्ट, उदयपुर ने इस कार्य को आगामी वर्षों के लिए लगातार करने का निर्णय लिया है। ट्रस्ट की सोच है कि इसी तरह दिगम्बर समाज के मन्दिरों या संस्थानों के असामान्य समस्या का समाधान निकाला जावे। इसी प्रकार ट्रस्ट आगामी वर्षों में दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्रों में रहने तथा खाने की सुविधा विकसित करने का विचार रखता है। ट्रस्ट के ट्रस्टी निधि जैन (मो. नं. 9352500148) के द्वारा बताया गया कि ट्रस्ट की सोच है कि अन्य धर्मावलम्बियों की तुलना में दिगम्बर तीर्थ क्षेत्रों में रहने तथा खाने की सुविधा में सुधार लाना अति आवश्यक है।

श्री विपिन जैन (मो. 09414004208) की सलाह : वर्षा जल के संग्रहण करने के बहुत से वैज्ञानिक तरीके हैं। अलग-अलग जरूरतों की पूर्ति, अलग-अलग क्षेत्रफल के अनुसार अलग-अलग विधियों को काम में लिया जाता है। ब्यावर के मन्दिरों में लगाई गई वर्षा जल पुर्नभरण की संरचना सबसे सरल है जो कि लोगों के घरों में भी लगाई जा सकती है। एक हजार वर्गफिट की छत से करीब 50 से 60 हजार लीटर एकत्रित किया जा सकता है। जल की शुद्धता के लिए उसे फिल्टर के द्वारा निकाल कर भूजल में मिलाया जाता है। साथ ही जाली, पाईप, वाल्व इत्यादि काम में लिये जाते हैं। पहली वर्षा का जल जमीन में न जाकर सीधे ही बाहर निकल जावे, इसका ध्यान रखा गया है।

श्रुतधाम महोत्सव 20 जनवरी से 1 फरवरी 2011

श्रुतधाम में श्री आदिनाथ भगवान की स्थापना

अनेकान्त ज्ञान मंदिर - श्रुतधाम, बीना में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज एवं परम पूज्य मुनि श्री सरलसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से एवं परम श्रद्धेय ब्र. संदीप जी 'सरल' के पुनीत सानिध्य एवं मार्गदर्शन में धर्मप्रभावना के रूप में श्रुतधाम महोत्सव के रूप में धर्म की प्रभावना इस प्रकार से हुई। 20 जनवरी 2011 को ध्वजारोहण डॉ. महेन्द्र जी, श्रीमती कांति जैन कनाडा (विदेश से आगत) ने किया। वेदी शिलान्यास का पुनीत कार्यक्रम पं. नन्हें भाई शास्त्री सागर ने करवाया। श्रुतधाम के नाम से निर्मित सी.डी. (ऑडियो) का लोकार्पण श्री वीरेन्द्र कुमार मोदी अशोकनगर ने किया। ब्र. संदीप जी 'सरल' के मंगल प्रवचन भी हुए। 21 जन. को भक्तामर मंडल विधान सानंद सम्पन्न हुआ। 30 जनवरी को अनेकान्त ज्ञान मंदिर में प्रातः 9.00 बजे श्रुतधाम के बड़े बाबा के पदार्पण पर शहर के प्रतिष्ठान बंद रहे, आबाल-वृद्ध नर-नारी शोभायात्रा में सम्मिलित हुए, प्रत्येक परिवार ने मां जिनवाणी की आरती उतारी। खुशियों में मिठाईयां, फल आदि वितरित किये। बीना के वृद्धजनों के मुख से यह कहते हुए सुना गया कि इतनी उत्साह, उमंग के साथ शोभायात्रा कभी देखने-सुनने में नहीं आई। प्रतिमा जी की छवि इतनी सौम्य है कि लोग देखते ही रह जाते हैं, खुशी के आंसु छलक आते हैं। प्रशासनिक अधिकारी, राजनेता सभी ने सम्मिलित होकर अपनी सहभागिता प्रदान की। 31 जन. को घटयात्रा एवं वेदीशुद्धि का कार्यक्रम अतिभव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। 1 फरवरी को प्रातः 8.30 बजे श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। भक्तामर स्तवन, श्री आदिनाथ भगवान की पूजनोपरांत निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। दोपहर में एक बजे वेदी पर आदिनाथ भगवान की स्थापना का कार्यक्रम ध्वजारोहण, दीपप्रज्ज्वलन, मंगलाचरण पूर्वक प्रारम्भ हुआ। बीना के अलावा अनेक शहरों, नगरों, गांवों से हजारों दर्शक प्रतीक्षारत थे कि प्रभु वेदी पर किस प्रकार विराजेंगे। सर्वप्रथम विशाल कमलासन रखा गया और कुछ ही क्षणों में आकाशमार्ग से आदिप्रभु आए और आसन पर विराजमान हो गए। भक्तों की खुशियों का ठिकाना नहीं रहा। ब्र. संदीप जी 'सरल' ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि-श्री आदिनाथ भगवान की छत्र छाया में पूज्य गुरुजनों के मंगल आशीर्वाद से एक बहुत ही बृहद्कार्य सहज, सानंद सम्पन्न हुआ। सिर्फ बीना वासियों ने ही नहीं अपितु श्रुतधाम से जुड़े देश-विदेश से आगत धर्मावलम्बियों ने इस कार्य में जो तन, मन और धन से समर्पण दिया है वह आप सभी के सम्यक्त्व प्राप्ति में साधन बनेगा ऐसी प्रशस्त भावना रखता हूँ। आदर्श देव, आदर्श जिनालय के निर्माण की प्रेरणा प्रदान की और मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि सदाचारी, सप्त व्यसन त्यागी लोगों ने ही प्रारम्भ से लेकर अभी तक पाषाणा उत्खनन से लेकर मूर्ति स्थापित करने तक की महत् यात्रा में सहयोग कर पाषाण में जीवन्त भगवान का रूप दिया है।

श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं विश्वशांति कल्याण महोत्सव

प्रातः स्मरणीय अध्यात्म सरोवर के परम हंस परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद एवं उनके परम शिष्य परम पूज्य मुनिश्री अभयसागर जी, मुनिश्री प्रभातसागर जी

एवं मुनिश्री पूज्यसागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में खरगापुर, टीकमगढ़ (म.प्र.) में श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं विश्वशांति कल्याण कामना महायज्ञ महोत्सव समारोह दिनांक 03 से 11 फरवरी 2011 तक बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया और पूरे नगर में धूमधामपूर्वक धर्मप्रभावना की गई। समीपवर्ती क्षेत्रों के दर्शन, पूज्य मुनि के तत्त्वोपदेश, विधान की मंत्र अनुष्ठान विधि, विद्वानों के प्रवचन एवं ख्यातिप्राप्त कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लाभ सभी लोगों ने लिया।

रानोली में धर्म प्रभावना

राजस्थान प्रान्त के सीकर जिले का रानोली गांव जो कि वर्तमान युग के प्रसिद्ध जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज के गुरु महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी की जन्मस्थली के रूप में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 पर प्रदेश की राजधानी जयपुर से 92 कि.मी. की दूरी पर स्थित इस गांव में मुनियों का अक्सर आना जाना हो जाता है लेकिन इस वर्ष के फाल्गुन माह के अष्टान्हिका पर्व के दौरान हमारे गांव के लोगों को मिला आचार्य विद्यासागर जी महाराज के धर्म प्रभावक शिष्य मुनि आर्जवसागर जी महाराज का सानिध्य अपने आप में अनूठा रहा। इस अवसर पर मुनिश्री के सानिध्य में यहां अनेक धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। हमारे निवेदन पर मुनिश्री दांता से विहार कर जब 9 मार्च 2011 को यहां पहुंचे तो भक्ति से सरोबार यहां के लोगों ने उनका पूर्ण भक्तिभाव से यहां प्रवेश कराया और महाकवि आचार्य ज्ञानसागर स्मारक का अवलोकन भी कराया। मुनिश्री के ग्राम प्रवेश के दिन ही शाम को यहां ''आचार्य ज्ञानसागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला'' का शुभारम्भ हुआ जिसमें प्रथम दिन से ही लगभग चालीस (40) बालक बालिकाओं ने जैनधर्म के संस्कारों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया। पाठशाला के लिए एक वर्ष के अधिष्ठाता के रूप में गांव के ही श्रेष्ठी श्री नथमल जी छाबड़ा ने पाठशाला का कलश स्थापित किया एवं पाठशाला को निरन्तर सहयोग देते रहने का भी विश्वास दिलाया। 12 मार्च को श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु नसियां जी में मुनिश्री के सानिध्य में भगवान चन्द्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक मनाया गया। इस अवसर पर शांति विधान मण्डल की पूजन कर निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। 12 से 19 मार्च तक बड़ा मंदिर जी में नन्दीश्वर द्वीप विधान मण्डल की संगीतमय पूजा अर्चना स्थानीय पण्डित विनोद कुमार जी जैन ''शास्त्री'' द्वारा कराई गई। अष्टान्हिका पर्व के इन आठ दिनों में प्रतिदिन मुनिश्री ने अपने मंगल उद्बोधन में जैनागम के गूढ़ रहस्यों पर सरल भाषा में प्रकाश डाला। महुआ (भरतपुर) से आई संगीत पार्टी सानू कुमार एण्ड पार्टी ने संगीत की मधुर धुनों से गांव के वातावरण को भक्ति के रंग में रंग दिया। 15 मार्च को गांव की एक प्रसिद्ध शिक्षण संस्था ''ग्रामीण बाल विकास उच्च माध्यमिक विद्यालय'' में मुनिश्री का मंगल उद्बोधन हुआ जिसमें मुनिश्री ने विद्यार्थियों को जीवन की कल्याणकारी बातों से अवगत कराते हुए गुरु के प्रति विनयशीलता तथा मांसाहार, शराब एवं तम्बाकू सेवन से होने वाली हानियों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं इन सबके त्याग करने का संकल्प कराया। 15 मार्च को ही समाज के प्रबंधकारिणी के सदस्यों ने मुनिश्री को अवगत कराया कि स्थानीय चन्द्रप्रभु नसियां जी का यह शताब्दी वर्ष चल रहा है और इस उपलक्ष्य में उन्होंने विशेष कार्यक्रम आयोजित करने की मंशा जताई तो मुनिश्री ने ''पंचकल्याणक मण्डल विधान एवं मानस्तंभ महास्तकाभिषेक का कार्यक्रम आयोजित करने की सलाह

देते हुए इसके लिए 20 व 21 मार्च का समय स्थानीय समाज को दिया। समाज के पदाधिकारियों ने इसे मुनिश्री के आशीर्वाद के रूप में लेते हुए आयोजन की तैयारियां प्रारम्भ कर दी और मात्र 4 दिन के अल्प समय में देश के कोने-कोने में कार्यक्रम की सूचना पहुंचाने की व्यवस्था की एवं प्रवासियों को भी कार्यक्रम में शामिल होने का पूरा दबाब बनाया। समाज के लोगों का आग्रह स्वीकार करते हुए यहां के सूरत (गुजरात)'' प्रवासी बड़जात्या परिवार जिनके पूर्वजों ने नसियां जी का निर्माण करवाया था वे अपने पूरे नाते रिश्ते दारों सहित पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने में पूरा योगदान दिया। इस अवसर पर 20 मार्च को जब पूरे गांववासी रंगों की धुलेण्डी खेलने में मस्त थे तब जैन समाज के लोग केसरिया वस्त्रों में सुसज्जित हो पंचकल्याणक मण्डल विधान की आराधना में लीन थे। टीकमगढ़ (म.प्र) से पधारे विधानाचार्य पं. मनीष जी दिगम्बर ने शास्त्रोक्त विधि विधान से प्रातः जब कार्यक्रम का ध्वजारोहण अशोक कुमार जी बड़जात्या ने किया तो नजारा अपने आप में अलौकिक था। ध्वज जब पूर्व दिशा की ओर लहराया तो मुनिश्री ने इसे अत्यंत शुभ का सूचक बताते हुए सबके लिए मंगलकारी बताया। विधान में सौधर्म इन्द्र श्री ज्ञानचंद जी बड़जात्या, कुबेर इन्द्र श्री ओमप्रकाश जी बड़जात्या, ईशान इंद्र श्री शान्तीलाल जी एरा, सनत कुमार इन्द्र श्री विनोद कुमार जी राय, माहेन्द्र इन्द्र श्री विजय कुमार जी बड़जात्या तथा महायज्ञनायक श्री मनोज कुमार जी कासलीवाल बने। कार्यक्रम के दूसरे दिन 21 मार्च को प्रातःकाल विश्वशान्ति महायज्ञ के बाद मुनिश्री का ध्यान एवं योग पर मार्मिक उद्‌बोधन हुआ और इसके विभिन्न प्रकारों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए ध्यान एवं योग की क्रियाओं से होने वाले लाभों को बताया। इस अवसर पर बाहर से पधारे विशिष्टजनों में कीर्तिनगर, जयपुर के जैन समाज अध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद जी कासलीवाल, सूरत के उद्योगपति श्री नरेश कुमार जी, महाराज श्री के गृहस्थ जीवन के लघुभ्राता डॉ. संजय जी जैन, अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के मंत्री श्री ज्ञानचंद जी झांझरी, मानस्तम्भ के निर्माण कार्य में सहयोगी रहे स्वर्गीय छिगनलाल जी झांझरी के भीलवाड़ा से पधारे सुपुत्र सुगन चन्द जी झांझरी एवं सुपौत्र संजय कुमार, कीर्ति नगर जयपुर के श्री मुकेश कुमार जी छाबड़ा (जिन्होंने यहां महाराज के सानिध्य में रहकर अष्टान्हिका के उपवास किए) सहित विधान में भाग लेने वाले इन्द्रों का भी साफा, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद श्रीजी की भव्य रथयात्रा निकाली गई जिसमें स्थानीय समाज सहित बाहर से पधारे सैकड़ों लोगों ने भाग लेकर पूरे गांव के वातावरण में भक्ति रस घोल दिया। गांव के प्रमुख मार्गों से होती हुई रथयात्रा के वापिस नसियां जी पहुंचने के पश्चात् नसियां जी में बने मानस्तंभ के मनोज्ञ जिनबिम्बों का अभिषेक का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रमों के इन दोनों दिनों के वात्सल्य भोजन की व्यवस्था श्री नवतरन जी बड़जात्या की ओर से की गई। मानस्तम्भ के महामस्तकाभिषेक के तुरन्त बाद मुनिश्री ने भी भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा की ओर मंगल विहार किया तो दिनभर कार्यक्रम का आनन्द ले रहे समाज के प्रत्येक वर्ग की आंखों से अश्रुधारा बह निकली। नन्हें बालक एवं बालिकाओं जिन्हें मुनिश्री का सर्वाधिक वात्सल्य मिला था उनके आंसू तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। सभी ने सजल नेत्रों के साथ मुनिश्री को रैवास तक पहुंचाया।

विनोद कुमार जैन (झांझरी)
रानोली (सीकर) राजस्थान

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**
प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य
तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

ट्विकल जैन, अमित कुमार जैन
सी-103, हरिमार्ग, जे.डी.ए. कालोनी
मालवीय नगर, जयपुर-302017

द्वितीय श्रेणी

श्रीमती किरण द्वारा श्री सुरेश कुमार जैन
सुविधि सदन, आदिनाथ कालोनी,
जयपुर रोड, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर

तृतीय श्रेणी

श्रीमती सुषमा पति श्री कुलदीप जैन
228/12, न्यू रेल्वे रोड, आदर्श नगर,
जैन डायग्नोस्टिक के पास, गुड़गांव (हरियाणा)

उत्तर पुस्तिका - दिसम्बर 2010

1. विदेह क्षेत्र में 2. इद्रभूति गौतम 3. राजा चेटक
4. छह 5. हाँ 6. हाँ 7. नहीं 8. हाँ
9. आठ 10. विद्यानुप्रवाद 11. 225

12. पटाखे से कभी हाथ चलते हैं, दुकानों व मकानों में आग लग जाती है प्रदूषण फैलता है। पैसों का अपव्यय होता है और नियम से अग्निकायिक, वायुकायिक व त्रसकायिक जीवों एवं यहां तक कि पशु पक्षियों तक की हिंसा हो जाती है।

13. 12 14. 14 15. 30
16. 72 17. सही 18. गलत
19. सही 20. सही

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 किसने णमोकार मंत्र को आद्य मंगल रूप कहकर अपूर्व महिमा स्वरूप बतलाया है?
धरसेनाचार्य [ ], भूतबलि आचार्य [ ], वीरसेनाचार्य [ ]

प्र. 2 हर किसी कार्य की निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति के लिए क्या करना चाहिए?
मंगलाचारण [ ], जाप [ ], नवग्रह विधान [ ]

प्र.3 जो परम पद में स्थित हैं उन्हें क्या कहते हैं?
अरिहंत [ ], परमेष्ठी [ ], सिद्ध [ ]

प्र. 4 जो अष्ट मंगल और अष्ट प्रतिहार्य में समाहित हैं।
दर्पण, झारी [ ], चँवर, छत्र [ ], ध्वजा, कलश [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 तीर्थंकर का रुधिर लाल होता है [ ]

प्र.6 केवली भगवान कवलाहार नहीं करते हैं [ ]

प्र.7 चौदह पूर्व दृष्टिवाद अंग के भेद हैं [ ]

प्र.8 दिगम्बर गुरु के बाह्य पहिचान में केशलोंच भी एक है [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 णमोकार मंत्र .... भाषा में है?
[संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी]

प्र.10 .... अक्षर में पञ्च परमेष्ठी समाहित हैं?
[ओम (ॐ), ह्रीं, श्रीं, ह्राँ]

प्र.11 लोक में .... मंगल हैं?
[पाँच, तीन, चार]2

कृपया यहाँ से निकालें

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये -

प्र.12 मंगल पद का शाब्दिक अर्थ क्या है?

....

....

सही जोड़ी मिलायें :-

प्र.13 अरिहंत के	पसीना रहित होना
प्र.14 जन्म के अतिशयों में	उपसर्ग अभाव
प्र.15 लोक में मुनिराजों की संख्या	णमोकार मंत्र की महिमा से
प्र.16 निरंजन बना	तीन कम नौ करोड़

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :-

प्र.17 सुभौम चक्रवर्ती णमोकार मंत्र की अविनय से नरक गया । [ ]

प्र.18 कुत्ते को णमोकार मंत्र पद्मरुचि सुनाया। [ ]

प्र.19 अष्ट कर्मों में से मुक्त होने वाले अरिहन्त कहलाते हैं। [ ]

प्र.20 अरिहन्त भगवान की पहचान अष्ट प्रातिहार्य हैं । [ ]

आधार : जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री कमलजी काला, जयपुर ● श्री अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता। ● श्री नरेश जैन, सूरत वाले (दिल्ली)

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, पूर्व अध्यक्ष जैन समाज, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र प्राचीन बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार, गाजियाबाद ● श्री श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर ● श्री ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छावड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह
श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती

कोपरगाँव
श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर
श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया
अध्यक्ष, चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़
श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई

भाव विज्ञान परिवार

✷ आजीवन सदस्य ✷

श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला डोइया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका
श्री राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री महावीर जी सोगानी
श्री संजय सोगानी
श्री अरूण कुमार सेठी
श्री विनोद पांडया
श्री वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती उन्नति पाटनी
श्रीमती सुनीता कासलीवाल
श्रीमती अनीता वैद्य
श्रीमती पदमा लुहाड़िया
श्रीमती सुनीता काला
श्री प्रमोद काला
श्रीमती निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री साक्षी सोनी
श्री महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री टीकमचंद बाकलीवाल
श्री हरीशचंद छावड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री पुष्पा सोगानी
श्री राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री पारस सौगानी
श्रीमती अरूणा अमोलक काला
श्री कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती इंद्रा मनीष बज
श्री नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती रानीदेवी सुरेशचंद मौसा
श्रीमती आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती राखी आशीष सोगानी
श्रीमती चंद्रलेखा महावीर प्रसाद शाह
श्रीमती प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती शांति देवी पांडया
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री निर्मल कुमार पाटनी
श्री मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री हरकचंद छावड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ .विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री रीतेश बज
श्री अनिल कुमार बोहरा
श्री नवीनकुमार छाबड़ा

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री महेन्द्र प्रकाश काला
श्री बाबूलाल सेठी
श्री प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री कैलाश फूलचंद पंडया
डॉ. विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जीवन्धर कुमार सेठी
श्री सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोषी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छावड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायके
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छावड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला

पिसानगन

श्री पुखराज पहाड़िया
श्री सज्जन कुमार दोशी
श्री अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांडया
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांडया
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावरी

दाँता-रामगढ़

श्री विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री विनोद कासलीवाल, दाँता-रामगढ़
श्री सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता-रामगढ़
श्रीमती मायादेवी ध.प. कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री राजकुमार छाबड़ा
श्री शान्तिलाल रांरा
श्री रतनलाल कासलीवाल
श्री सुभाषचंद छाबड़ा

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री विकास कुमार काला
श्री ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी

श्री गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ

श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन

बेंग्लुरु

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार छावड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री अशोक कुमार सोगानी
श्री भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री कमल कुमार धगड़ा
श्री शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती पुष्पा सोनी
श्री अशोक कुमार काला
श्री विजय कुमार फागीवाला
श्री पारसमल अजमेरा
श्री स्वरूपचन्द रांवका
श्री डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्रीपाल अजमेरा

सुजानगढ़

श्री पारसमल पाण्डया

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन
श्री राजेन्द्र जैन

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी जैन धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से
भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य
मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

- ☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।
- ☛ सत् साहित्य समीक्षा।
- ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।
- ☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।
- ☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।
- ☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।
- ☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।
- ☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।
सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

रानोली (सीकर) कार्यक्रम की झलकियाँ

रानोली में शास्त्रदान करते हुए मुनिश्री से आशीष लेते हुए उद्योगपति श्री नरेश जैन, सूरत

नसियां जी, रानोली के शताब्दी समारोह के अंतर्गत निकाली गई श्री जी की रथयात्रा में नाचते गाते श्रद्धालुगण ।

विद्यालय में मुनिश्री के प्रवचन के दौरान उपस्थित विद्यार्थी एवं इनसेट में मुनिश्री स्कूल निदेशक श्री हुकमीचंद जी सैनी को साहित्य भेंट करते हुए।

नसियां जी में पंचकल्याणक मण्डल विधान के दर्शन करते मुनिश्री आर्जवसागर जी एवं क्षुल्लक श्री तथा पूजन करते इन्द्र इन्द्राणी

आचार्य ज्ञानसागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला, रानोली की शिक्षिकाएं एवं छात्राएं मंगलाचरण करते हुए ।

मुनिश्री आर्जवसागर जी के गृहस्थ जीवन के डॉ. संजय जी जैन को ध्यान, योग के प्रबंध विषय प्रस्तुति पर प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए श्री ज्ञानचंद जी झाझंरी

रानोली जैन समाज अध्यक्ष श्री रतनलाल जी कासलीवाल को भाव विज्ञान पत्रिका का सदस्य बनने पर मैडल पहनाते हुए पत्रिका से जुड़े कार्यकर्ता

नसियां जी में स्थित मानस्तंभ के दर्शन करते हुए मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान,
सुखदेव आश्रम, लाडनूँ

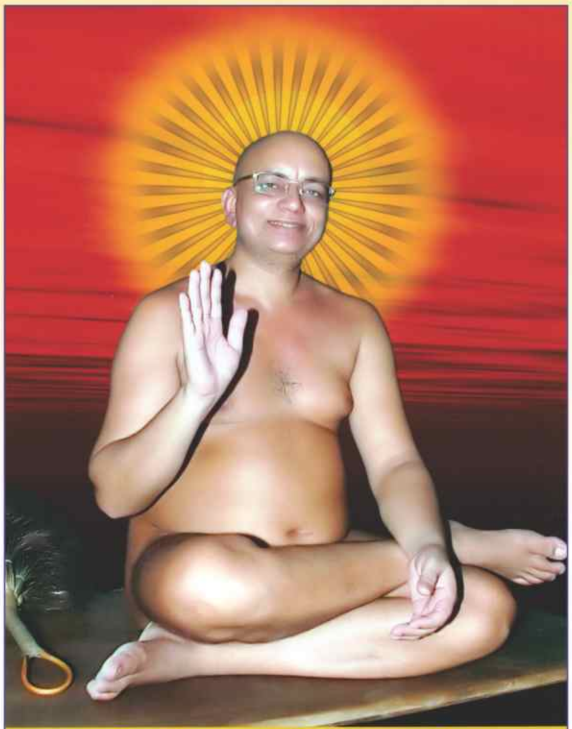

पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज

मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज
के 23 वे दीक्षा दिवस पर
एवं 24 वें दीक्षा वर्ष के आरंभ
के उपलक्ष्य में भावविज्ञान परिवार
की और से शत्-शत् वंदन
एवं नमन्

पुण्यार्जक

सकल दिगम्बर जैन समाज

सौजन्य से

पोस्ट-दाँता, तहसील रामगढ़
जिला - सीकर (राजस्थान) - 332702

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)